ज्ञानामृत

फरवरी, 1984
वर्ष 19 ❋ अंक 8, मूल्य 1.35

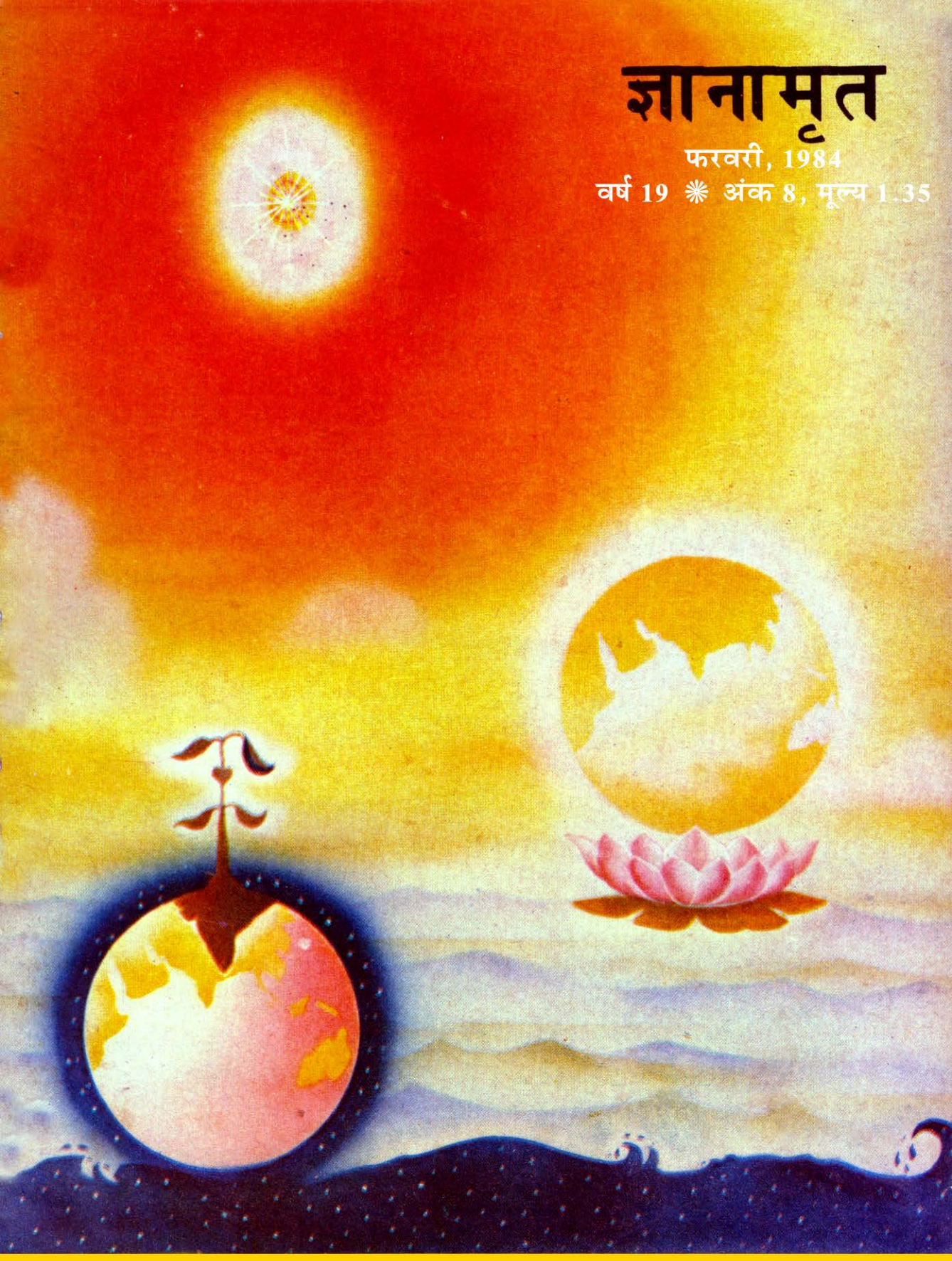

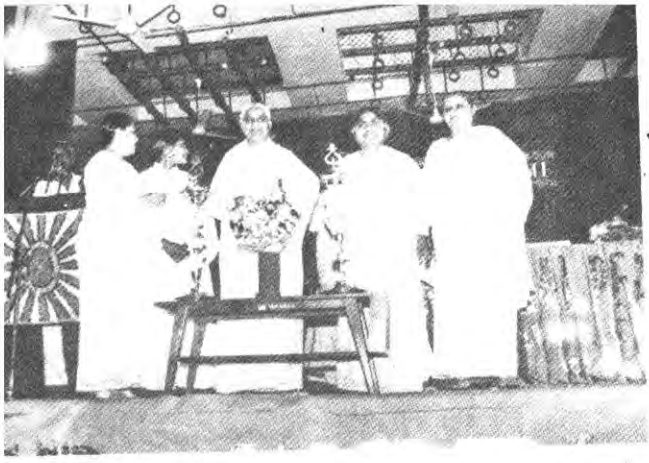

मद्रास में हुए शान्ति सम्मेलन का उद्घाटन दृश्य। (बाएं से) ब्र० कु० शिव कन्या, दादी ब्र० कु० प्रकाशमणि जी, ब्र० कु० दादी जानकी जी तथा ब्र० कु० मोहिनी जी।

मद्रास में हुए विश्व शान्ति महोत्सव में उद्घाटन भाषण करते हुए मद्रास उच्च-न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता के० बी० एन० सिंह जी।

विशाखापटनम में ब्र० कु० हेमा आन्ध्र प्रदेश के मुख्य मन्त्री भ्राता एन० टी० रामा राव को श्री लक्ष्मी नारायण का चित्र भेंट करते हुए।

थाना में 'मानव सुख-शान्ति आध्यात्मिक मेले' का उद्घाटन करते हुए ब्र० कु० हृदय माहिनी जी तथा ब्र० कु० बृज इन्द्रा जी।

अमरावती में विश्व शान्ति मेले में महाराष्ट्र के राज्य मन्त्री भ्राता शेरेकर जी, अमराव ती के०ही० सी०, के० जी० देशमुख तथा भ्राता सुरेन्द्र भुवार जी खड़े हैं। ब्र० कु० पुष्पा तथा सीता भी चित्र में दिखाई दे रही है।

रौरकला में स्वामी चिन्मन्यानन्द जी को श्रीकृष्ण का चित्र सौगात देते हुए ब्र० कु० सरोज

मद्रास में हुए विश्व-शान्ति महोत्सव के अवसर पर निकाली गई शोभा यात्रा का मनोरम दृश्य

फिल्लौर सेवा केन्द्र का उद्घाटन करती हुई ब्र० कु० दादी चन्द्रमणि जी।

Regd No. 10563/65-D(E)-70

नागपुर में ब्र० कु० पुष्पा, भारत के विदेश मन्त्री भ्राता नरसिंहाराव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ।

ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि, मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० ई० वि० विद्यालय, बंगलोर में विश्व-शान्ति भवन के उद्घाटन अवसर पर शिवध्वजारोहण करते हुए। चित्र में भ्राता बी० डी० जत्ती, पूर्व उप-राष्ट्रपति जी, ब्र० कु० सुदेश जी, ब्र० कु० रमेश, ब्र० कु० जगदीश जी, ब्र० कु० हृदयपुष्पा जी, ब्र० कु० सुन्दरी जी तथा अन्य उपस्थित हैं ।

खलीकोट में उड़ीसा सरकार द्वारा ऋण मेला में लगाई आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन उड़ीसा के मुख्य मन्त्री भ्राता जानकी वल्लभ पटनायक जी द्वारा सम्पन्न हुआ। ब्र० कु० नीलम ईश्वरीय सन्देश देते हुए ।

माउँटआबू में हुए राजयोग शिविर में डाक्टरों का एक ग्रुप, ब्र० कु० दादी जानकी जी, ब्र० कु० चन्द्रमणि जी, ब्र० कु० मनोहरइन्द्रा जी तथा अन्य राजयोग शिक्षिकाओं के साथ।

अकोला में हुए आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन न्यायाधीश भ्राता धारेजी कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० पुष्पा तथा अन्य ब्र० कु० भाई बहिन खड़े हैं।

डोम्बीवली (बम्बई) में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक मेले के अवसर पर निकाली गई शान्ति यात्रा की अगवानी करती हुई महाराष्ट्र जोन इन्चार्ज ब्र० कु० ब्रिज इन्द्रा जी ।

अमृत-सूची

क्र० सं०	विषय			पृष्ठ
१.	राष्ट्रपति विश्व-शान्ति महासम्मेलन का उद्घाटन करेंगे	...	...	१
२.	प्रथम विश्व-शान्ति महासम्मेलन का सिंहावलोकन तथा द्वितीय महासम्मेलन का पूर्वदर्शन (सम्पादकीय)	...	...	२
३.	आई उजली शिव-रात (कविता)	...	...	४
४.	ईश्वरीय अनुभूति	...	...	५
५.	युवा शक्ति और विश्व परिवर्तन	...	...	७
६.	शरीर-निर्वाह व आत्म-निर्वाह	...	...	९
७.	भोजन की शुद्धता	...	...	१२
८.	सचित्र समाचार	...	...	१३
९.	सब के जो बाबा हैं उनके नाम, रूप और कर्त्तव्य कौन से हैं ?	...	...	१५
१०.	सेवा समाचार (चित्रों में)	...	...	१९
११.	मेरे ब्रह्मा बाबा के संस्मरण	...	...	२१
१२.	विश्व को शान्ति की किरणें प्रदान करने वाला शान्ति स्तम्भ	...	...	२३
१३.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	...	...	२५
१४.	शिक्षा-नव विश्व संरचना के लिए अथवा नये विश्व के लिए	...	...	३०

राष्ट्रपति विश्व शान्ति महासम्मेलन का उद्घाटन करेंगे

खुशी की बात है कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा आयोजित विश्व शान्ति महासम्मेलन का उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति मान्य ज्ञानी जैलसिंह जी स्वयं करेंगे। यह कार्यक्रम ९ फरवरी को सायं ५-३० पर नयी देहली के भव्य हाल 'विज्ञान भवन' में प्रारम्भ होगा। इस अवसर पर संयुक्त राष्ट्र संघ के सहायक महा सचिव (Asstt. Secretary General) डॉ० जेम्ज़ ओ० सी० जोनह भी पधार रहे हैं। इनके अतिरिक्त संयुक्त अरब रिपब्लिक के दिवंगत प्रधान की धर्मपत्नी श्रीमती सादात भी तथा इंग्लैण्ड के लण्डन-स्थित वैस्ट मिन्स्टर एबे (West minster Abbey) के अधिपति (Dean) भ्राता एडवर्ड कार्पेन्टर और उनकी धर्मपत्नी भी सम्मिलत होंगे।

ज्ञात रहे कि उद्घाटन के बाद इस महासम्मेलन के खुले अधिवेशन तथा वर्कशाप इस संस्था के मुख्यालय, माउण्ट आबू में १० फरवरी से १२ फरवरी तक होंगे।

इससे पूर्व ९ फरवरी को मध्याह्नोत्तर काल में एक विशाल जलूस आबू में निकलेगा जिसमें भारत के अतिरिक्त लगभग ४५ विदेशों से आये हुए २५०० प्रतिनिधि भी सम्मिलित होंगे।

सम्मेलन का शुभारम्भ धार्मिक कार्यविधि द्वारा ५ और ६ फरवरी को होगा। उसमें प्रसिद्ध धार्मिक नेता दलाई लामा पधार रहे हैं।

४८वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती पर शुभ बधाई

प्रथम विश्व शान्ति महासम्मेलन का सिंहावलोकन तथा द्वितीय महासम्मेलन का पूर्वदर्शन

गत वर्ष माउण्ट आबू में जो विश्व शान्ति महा-सम्मेलन हुआ था, वह अपनी तरह का एक सफल प्रयास सिद्ध हुआ। उस आयोजन में जो १५० से अधिक पत्रकार, सम्पादक आदि सम्मिलित हुए थे, वे केवल अपने-अपने पत्रों द्वारा अपने पाठक वर्ग को इस महा-सम्मेलन की उपलब्धियों से परिचित कराने के निमित्त ही नहीं बने बल्कि उन्होंने स्वयं इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की कार्य-विधि को निकटता से देखा। वे इसके कार्यकर्त्ताओं के सम्पर्क में आये और यहाँ की शिक्षा से लाभ उठाने वालों से वे मिले और इसमें भी यहाँ शान्ति के कार्य को क्रियात्मिक रूप से होते हुए उन्होंने देखा। यही बात वक्ताओं के बारे में भी कही जा सकती है। जो देश-विदेश के कोने-कोने से आये थे अथवा भिन्न-भिन्न वर्गों से सम्बन्धित थे। बुद्धि-जीवी लोगों ने, जिन्हें कि समाज के 'नेत्र' (Observers) अथवा 'मुख' (Spokesman and opinion Creators) कहा जा सकता है, निकटता से इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के कार्य-कलाप का अवलोकन किया परन्तु जो इसकी लाली देखने आये थे, वे स्वयं भी लाल हुए बिना न रह सके। उनके मन पर शान्ति की एक अमिट छाप लग गई और उनके द्वारा कई एक सार्वजनिक मंचों पर ऐसी चर्चा हुई तथा कई संस्थाओं में इसका प्रसंग चला जिसके फलस्वरूप जन-जन को शान्ति के इस वृहद कार्य का बोध हुआ।

उस महासम्मेलन में शान्ति के लिए जो एक चार्टर अपनाया गया, वह भी सागर मंथन से प्राप्त हुए नव रत्नों के समान था क्योंकि उसमें व्यक्तिगत, सामाजिक और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्ति प्राप्त करने के लिए कुछ सरल सूत्र थे जिनमें से हरेक अनेक रत्नों के तुल्य था। इस चार्टर की प्रतियों का वितरण देश-विदेश के विशिष्ट लोगों में किया गया। जिसे उन्होंने बहुत सराहा। अमेरिका में एक स्थान पर हुए एक ब्लैक मेयर्स सम्मेलन (Black Mayors Conference) के लगभग २५० महापौरों (Mayors) ने इसे औपचारिक रूप से, सर्व-सम्मति से अपनाया।

इतना ही नहीं, कोस्टा रिका देश के भूतपूर्व प्रधान, जो कि वर्तमान समय वहाँ पीस युनिवर्सिटी के कार्याध्यक्ष हैं, ने तो एक समझौते द्वारा उस विश्व विद्यालय का ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के साथ शान्ति के कार्यार्थ स्थाई मेल-जोल स्थापित किया है।

अन्यश्च, उक्त महासम्मेलन के अवसर पर जो योग शिविर किये गये, उसका लाभ भी अनेकानेक विशिष्ट व्यक्तियों को मिला। इस प्रकार शान्ति केवल एक चर्चा का ही विषय नहीं रहा बल्कि सम्मेलन में भाग लेने वाले अधिकतर लोगों ने शान्ति का अनुभव भी किया और श्रेष्ठतम जीवन के लिए प्रबल प्रेरणा भी प्राप्त की।

एक विशेष बात यह हुई कि विचारक, वक्ता व कर्मठ व्यक्ति परस्पर मिले जुले। उन्होंने विचारों का आदान-प्रदान किया। वे मानसिक रूप से एक-दूसरे के और निकट आये। उनमें एक आध्यात्मिक परिवार के सदस्यों के जैसी अनुभूति ने सुदृढ़ रूप लिया। इतने सारे देशों के लोगों में भ्रातृत्व की भावना की क्रियान्विति हुई। एक नये विश्व की संरचना के लिए वे परस्पर सहयोगी बने। संसार में नैतिक मूल्यों की पुनः स्थापना का कार्य बढ़ना चाहिए—इसके लिए वे कृत संकल्प हुए और कटि-बद्ध हुए मानो नये संसार का एक छोटा-सा नक्शा जीवित रूप में उनके सामने आया और शान्ति, प्रेम, सदाचार एवं आत्मिक सुख का, उन्होंने एक

जुट होकर रसास्वादन किया। प्राय: सभी ने एक स्वर होकर यह कहा कि हमने यहाँ स्वर्ग का अनुभव किया है, शान्ति की साँस ली है, एक रूहानी परिवार का सच्चा एवं नि:स्वार्थ प्रेम पाया है और एक इतने बड़े विश्व विद्यालय का शान्ति पूर्वक तथा अनुशासन-बद्ध संचालन देखा है।

देखा जाय तो ऐसा अनुभव होना स्वभाविक ही था क्योंकि सत्यता, प्रेम, सद्व्यवहार, सेवा और सद्भावना जो मधुवन अर्थात ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्यालय के अमिट गुण हैं, वे वहाँ आने वाले व्यक्तियों के अनुभव में सहज रूप से आते ही हैं। शहर की भाग-दौड़, कोलाहल, रेल-पेल और हाय-हल्ला से दूर झील और पहाड़ियों के वातावरण में इस तपोभूमि में ऐसा सूक्ष्म प्रभाव भरा हुआ है कि वह वहाँ आने वाले व्यक्तियों को आध्यात्मिकता और शान्ति की ओर अग्रसर करता ही है।

इस पर भी सर्वोपरि बात तो यह है कि वहाँ ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की जो शिक्षा अनुभाविनी बहनों ने अपनी मधुर वाणी द्वारा दी, उसका निराला आध्यात्मिक सुख भी वहाँ पधारने वाले जन-मानस को मिला। आत्मा क्या है, परमात्मा का क्या परिचय है, राजयोग का अभ्यास कैसे होता है—इन तथा अन्य सम्बन्धित सूक्ष्म विषयों का दुर्लभ बोध वहाँ आने वाले बहन-भाइयों को सरल भाषा में हुआ। इस अनमोल उपलब्धि से उनका मन गद्गद् हो उठा।

इन तथा अन्य सभी उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए इस मास 'विश्व शान्ति महासम्मेलन' का दूसरा दौर शुरू हो रहा है। इसमें भी वैज्ञानिकों, न्यायविदों, शिक्षाविदों, युवा वर्ग, महिला वर्ग, चिकित्सकों, समाचार-प्रसाराधिकारियों आदि-आदि के कार्याधिवेशन (Workshops) होंगे। इन सभी में समाज के नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान के विधि-विधानों पर गवेषणा, चर्चा तथा विचार-विमर्श होगा।

विशेष बात यह है कि इस मास होने वाले महासम्मेलन में धार्मिक नेतागण एक ऐसे नियम-पत्र के बारे में निर्णय लेंगे जिसमें वर्णित नियमों के पालन से धार्मिक क्षेत्र में स्थायी शान्ति हो सकती है। यह बात लोक-प्रसिद्ध है कि पिछले लगभग दो-ढाई हजार वर्षों से लोग प्राय: दूसरे धर्मावलिम्बयों पर कटाक्ष, आक्रमण तथा अत्याचार करते आये हैं और अभी भी वे उनसे अनुचित व्यवहार करते तथा उन पर आतंक ढाते हैं। इसलिये ऐसे नियम पत्र अथवा घोषणापत्र की आवश्यकता है जिससे कि सद्भावना बढ़े और पारस्परिक द्वेष तथा हिंसा का उन्मूलन हो।

इसी प्रकार, होने वाले महासम्मेलन में युवा वर्ग के लिये भी एक नियमावली स्वीकार की जायगी जिससे युवा वर्ग तोड़फोड़ की नीति को छोड़ कर रचनात्मक कार्य में प्रवृत्त हो और शान्ति तथा प्रगति के पथ पर अग्रसर हो।

सबसे बड़ी बात यह है कि इस महासम्मेलन में एक "शान्ति योजना" अपनाई जायगी। इसमें शान्ति की स्थापना के बारे में गुणात्मक दृष्टिकोण, अशान्तिकारक कारणों का विवरण तथा शान्ति-प्राप्ति की विधि का उल्लेख होगा।

इस प्रकार के अनेक बौद्धिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक लाभ के आयोजन इस महासम्मेलन के अन्तर्गत किये गये हैं।

—जगदीश

सूचना

अभी तक जिन सेवा केन्द्रों से ज्ञानामृत तथा वर्ल्ड रीन्युवल का शुल्क नहीं आया है कृपया वे शीघ्र भेजें।

आई उजली शिव-रात

(ब्र० कु० राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली)

'काली-रात' मिटाने को,
आई उजली 'शिव-रात'।
'शवों' की बारातों वालो!
'शिव' की भी तुम देख लो आज॥

इंगले-पिंगले, काने-अन्धे,
सबको करता वो स्वीकार।
देशी-विदेशी, काले-उजरे,
सबसे उसका एक-सा प्यार॥

निर्धन हो या हो धनवान,
राजन् हो या हो कंगाल,
आत्मा प्रत्येक उसका बच्चा,
चाहे उसे दिल से हो जो सच्चा,

झूठी बाह्य गाथाओं वालो!
आन्तरिक उसकी सुन लो आज।
'शवों' की बारातों, वालो!
'शिव' की भी तुम देख लो आज॥

ज्ञान की मस्ती, प्रकाश की बसती,
रुह की हस्ती, मौन की शक्ति,
चलन हो बदली, संस्कार हों बदली।
कर्म हों बदली, स्वभाव हो बदली।

ऐसी अलख अनुपम जगाने वाली।
प्रकाशमयी आई शिव-रात।
वेद ग्रंथों के 'मतवालो'।
शिव बाप की मत ले लो आज।

'शवों' की बारातों वालो!
'शिव' की भी तुम देख लो आज॥

इस रात में है स्वर्णिम दिन छिपा,
यह 'बारात' करे विकारों से अलविदा,

यही भावी जग का सूत्रपात,
यही करावे शिव से मिलाप,
भोजन का व्रत रखने वालो।
पावनता का व्रत ले लो आज॥

'शवों' की बारातों वालो!
'शिव' की भी तुम देख लो आज॥

(पृष्ठ ३१ का शेष)

धर्म एवं अध्यात्म भी एक परम विज्ञान है, क्योंकि जीवन की गुह्यतम आंतर खोज धर्म करता है अत: नये विश्व की शिक्षा में धर्म भी वैज्ञानिक होना चाहिए। अध्यात्म की दिशा में गहरी वैज्ञानिक खोज की प्यास पैदा कर देना ही धर्म की शिक्षा है। आज के इस बौद्धिक युग में विज्ञान सम्मत धर्म ही स्वीकार्य एवं व्यावहारिक बन सकता है। तीन सौ वर्ष पूर्व मानव को पता नहीं था कि शरीर में खून गति करता है। बर्तन में भरे पानी की तरह शरीर में खून का ख्याल था। जब पता चला खून की गति का तो सारे ख्याल, दृष्टि बदल गई। इसी प्रकार शरीर में क्रोध क्या करता है, प्रेम क्या करता है काम, लोभ अहंकार क्या करता है? इन सबका रासायनिक अर्थ क्या होता है? इनसे क्या हो रहा है? दबाने से क्या हुआ, जानने से क्या होगा? इन सब पर संशोधन आवश्यक है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में इस प्रकार के गहरे से गहरे सूक्ष्म अध्यात्म प्रयोग इसी वैज्ञानिक दृष्टि से स्वयं परमपिता परमात्मा करवा रहा है। इन वैज्ञानिक अध्यात्म प्रयोगों का अनुभव यह कहता है कि इन सबका व्यावहारिक उपयोग हमारी वर्तमान समूची शिक्षा पद्धति में होना नितांत आवश्यक है।

संक्षेप में नव विश्व संरचना के लिए आज की शिक्षा में सम्प्रदाय मुक्त, धर्म, साहस, विवेक और शान्ति की शक्ति समाहित हो, अभय, जागरूकता, मौन एवं योग का समन्वय हो। जिसमें प्रेम हो, विकास की चेष्टा हो तथा केन्द्र वैज्ञानिक हो तो एक अद्भुत नव विश्व चेतना बनाम रामराज्य की कल्पना साकार की जा सकती है।

ईश्वरीय अनुभूति

(ब्र० कु० हृदयमोहिनी, देहली)

ईश्वरीय-अनुभूति की प्यासी आत्माएं युगों से कठिन तपस्या, महान बलिदान और सर्वस्व त्याग करती आई हैं। किसी ने प्रभु-मिलन की प्यास में राज्य पाट छोड़कर जंगल की राह ली, तो किसी ने घर बार और परिवार का त्याग करके कुटिया में धूनी रमाई। किसी ने शरीर को कष्ट दिये तो किसी ने अखण्ड भक्ति की। परन्तु प्रभु-मिलन एक इन्तजार ही रह गया और यदि किसी को क्षणिक ईश्वरीय आभास हो भी गया तो वह सतत प्रभु से अपना नाता नहीं जोड़ सका।

परन्तु जबकि सृष्टि-चक्र अपने अन्तिम चरण पर पहुँचा है तो परमात्मा स्वयं उन आत्माओं से मिलने आये हैं जिन्होंने जन्म-जन्म उनके आने की राहें देखी थीं। अब हम उनसे मिलन मना पाये और उन्होंने ही आकर हमें अपना सम्पूर्ण ज्ञान दिया, तब ही हमारी सत्य की खोज समाप्त हुई। परमात्मा ने आकर स्वयं ही प्रजापिता ब्रह्मा के मुख से हमें बताया कि तुम बच्चे निरन्तर मेरी ईश्वरीय-अनुभूति में कैसे रहो। और हमने उनकी ही श्रीमत अनुसार अपने जीवन में किस तरह ईश्वरीय अनुभव किये, उसका उल्लेख हम आज करेंगे।

ईश्वरीय अनुभूति ही सर्वश्रेष्ठ अनुभूति

चाहे इस संसार में मनुष्य को कितने ही धन सम्पत्ति व वैभव क्यों न प्राप्त हो जाएं उसे आन्तरिक सन्तोष की महसूसता नहीं होती। तृष्णाएं बढ़ती जाती हैं और मनुष्य परमात्मा से दूर होता जाता है। सब कुछ पाकर भी उसे कुछ चाह बनी ही रहती है। परन्तु अपने दिल के सहारे, जीवन के आधार परमपिता को पाकर मनुष्य को पूर्ण आन्तरिक सन्तोष मिलता है, उसकी तृष्णाएं शान्त हो जाती हैं और उसका मन नाच उठता है, गा उठता है कि "पाना था सो पा लिया", सांसारिक वैभव उसे नीरस लगते हैं। उसका मन प्रकाशित हो उठता है। तो परमात्मा के मिलन के अनुभव ही सर्वश्रेष्ठ हैं। चाहे संसार में कोई कितना भी बड़ा पद क्यों न प्राप्त कर ले, परन्तु ईश्वरीय-अनुभवों की भेंट में सब कुछ फीका सा प्रतीत होता है।

ईश्वरीय अनुभूति क्या है ?

लोग भगवान की एक छवि निहारने के लिए या उनके दर्शन करने मात्र को ही प्रभु अनुभूति समझते हैं। परन्तु प्रभु-अनुभूति का अर्थ केवल इतना ही नहीं है, बल्कि हम निरन्तर मन व बुद्धि के द्वारा परमात्मा के साथ रहकर उसके सभी गुणों का रसास्वादन करते रहें, उसके सम्बन्ध से हमारा जीवन अतीन्द्रिय सुखों के झूले में झूलता रहे, उसकी सम्पूर्ण शक्तियों के हम सतत आभास में रहें और हम सदा अपने को उसके अति समीप अनुभव करें—यही ईश्वरीय अनुभूति है।

ईश्वरीय अनुभूति से पूर्ण आत्म-अनुभूति

क्योंकि परमात्मा निराकार अशरीरी है, तो हमें भी उसके सम्पूर्ण अनुभव करने के लिए पहले स्वयं को इस देह से भिन्न अशरीरी स्थिति में स्थित करना होगा। इसके लिए आत्मा का सम्पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। जब हम आत्माएं अपने सत्य स्वरूप में स्थित हो जाते हैं तो हमारा मन पूर्णतया शान्त होने लगता है, आत्मा अनेक संकल्पों के बोझ से हल्की होने लगती हैं, आत्मा स्वयं में सन्तुष्ट होने लगती है और उसके बाद ही आत्मा का सम्बन्ध परमात्मा से होता है और ईश्वरीय अनुभूति के क्षण प्रारम्भ होते हैं।

ईश्वरीय-अनुभूति के लिए किन-किन बातों की आवश्यकता है ?

ईश्वरीय अनुभूति के लिए न तो संन्यास लेने की आवश्यकता है और न ही शरीर को कष्ट देने की। बल्कि इसके लिए सर्वप्रथम तो ईश्वर का

सम्पूर्ण ज्ञान आवश्यक है। और सम्पूर्ण सत्य ज्ञान पुस्तकों से नहीं मिल सकता क्योंकि पुस्तकों में तो एक ही परमात्मा के बारे में अनेक मत हैं। उसका ज्ञान वह स्वयं ही देते हैं और कहते हैं अब तुम मेरे द्वारा ही मेरे को जानो।

दूसरी मुख्य बात है परमात्मा से सम्बन्ध की। ईश्वरीय अनुभूति के लिए हमें अपने सर्व सम्बन्ध परमात्मा से जोड़ने होंगे। वही मेरा मात-पिता, गुरु-शिक्षक, बन्धु सखा है। "भगवान मेरा है"—यह समीप का सम्बन्ध उसे जोड़ना होगा। क्योंकि सर्व सम्बन्ध उससे जोड़ने से देह के सम्बन्ध हमें आकर्षित नहीं करेंगे और तब ही हमें अधिक समय तक ईश्वरीय अनुभूति होगी।

तीसरी बात—प्रभु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव मन में जागृत करना होगा। सब कुछ तन, मन, धन ईश्वर का है, मेरा नहीं। जब हम यह मैं-पन समाप्त करते हैं, अपने कर्म और पल भी परमात्मा पर अर्पण करते चलते हैं तो हमारा सम्बन्ध निरन्तर परमात्मा से जुड़ा रहता है और हम ईश्वरीय रस चखते रहते हैं।

चौथी बात—ईश्वरीय अनुभवों के लिए जीवन में पवित्रता अति आवश्यक है। परम पवित्र परमात्मा की समीपता पवित्रता पर आधारित है। अगर मनुष्य के मन का आकर्षण थोड़ा भी अपवित्रता की ओर होगा तो परम पवित्र परमात्मा का आकर्षण समाप्त हो जायेगा। इसलिए ईश्वरीय अनुभूति के जिज्ञासुओं को पवित्रता से स्वयं का श्रृंगार करना चाहिए।

पांचवी बात—सांसारिकता से वैराग्य हमें ईश्वरीय-अनुभूति की ओर ले चलता है। यदि कोई चाहे कि वह दोनों नावों में पैर रख ले तो उसे कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। सांसारिकता में फँसा प्राणी ईश्वरीय रस नहीं ले सकता। क्योंकि उसकी बुद्धि सदा ही उलझन में फँसी रहेगी, उसकी बुद्धि की लाइन क्लीयर नहीं होगी।

और अन्तिम रूप से हम कहेंगे कि ईश्वरीय अनुभूति करने वालों को पूर्ण अन्तर्मुखी होना चाहिए। बाह्यमुखता तो सांसारिक है। अन्तर्मुखता मानो एक गुफा है जिसमें बैठकर योगी सदा ईश्वरीय रसों में खोया रहता है।

ईश्वरीय-अनुभूति के लिए ईश्वर के पास जाना होगा

जैसे अग्नि के समीप जाने से गर्मी और बर्फ के समीप जाने से शीतलता अनुभव होती है, उसी प्रकार ईश्वरीय अनुभूतियों के लिए बुद्धि से उड़कर उसके पास जाना होगा। अर्थात् ईश्वरीय अनुभूति का माध्यम है "राजयोग"। राजयोग अभ्यास में हम सदा परमात्मा के पास रहते हैं और उनसे ही वार्तालाप करते हैं। जितना-जितना हम योगाभ्यास करते हैं, हमारे अनुभव बढ़ते जाते हैं, हमें सम्पूर्ण ईश्वरीय शक्तियों के अनुभव होने लगते हैं।

कुछ अनुभव

ध्यान अवस्था में परमात्मा को देखना—यह तो हमारे लिए साधारण बात है। शिवबाबा ने हममें से अनेकों को दिव्य दृष्टि का वरदान देकर अनेक बार अपने दिव्य स्वरूप का साक्षात्कार कराया है। अपने परमपिता का दिव्य स्वरूप देखकर और अव्यक्त वतन में अव्यक्त ब्रह्मा के माध्यम से उनसे बातें करने में मन अतीन्द्रिय सुखों में डूब जाता है। भगवान से बातें करके कितना अथाह आनन्द मिलता होगा, यह आप कल्पना कर सकते हैं।

भगवान हमारे समक्ष साकार हुए, हमने उन्हें नव सृष्टि रचते देखा, हमने इन कानों से उसकी ज्ञान-मुरली की मधुर तान सुनी। हमने रोज भगवान की मधुर आवाज सुनी और उस ज्ञान के सागर को छलकते देखा। ये अनुभव तो मन को भावविभोर करने वाले हैं। जिनका रसास्वादन आप भी कर सकते हैं। जब भगवान को अपने सम्मुख साकार में बैठा देखते हैं तो मन अन्दर ही अन्दर नाचने लगता है, खुशी में तन-मन खिल उठता है। इन अनुभवों को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता।

इसके अतिरिक्त योग-युक्त स्थिति में रहने से, इस जीवन में निराले अनुभव हुए हैं और ज्ञान के साथ हम अपने अनुभवों से जानते हैं कि भगवान क्या है, और उनकी शक्तियाँ क्या हैं। वे कुछ अनुभव इस प्रकार हैं—

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

युवा शक्ति और विश्व परिवर्तन

ब्र० कु० पूनम, जयपुर

युवा ! युवा शब्द के उच्चारण के साथ ही हमारे मानस पटल पर कई तरह के व्यक्तित्व अंकित होते जाते हैं, अनेक प्रकार के चित्र उभरते जाते हैं। विश्व विद्यालय परिसरों में पेपर बॉय-काट, नारे, तोड़फोड़, सब और रेलों पर पथराव, औद्योगिक संस्थानों में आगज़नी, बाजारों और बैंकों में लूट पाट, पुलिस से संघर्ष, मादक द्रव्यों की तस्करी, हिप्पियों के रूप में बाल बढ़ाये ग्रुप, दूतावासों के सामने धरने, छापेमार दस्ते और वायु-यानों का अपहरण। या फिर चित्र उभरता है मुक्त यौनाचार में लिप्त किशोर-किशोरियों का। और साथ ही ध्यान आता है सीमा पर तैनात उन जवानों का तथा निरंतर शोध में रत युवा वैज्ञानिकों का। रूप अनेक हैं परन्तु आधारभूत बिन्दु है, युवावस्था। वस्तुत: युवावस्था ही जीवन का वह भाग है जबकि मनुष्य में उमंग होती है, उत्साह होता है और जज्बात होते हैं कुछ कर दिखाने के। उमंगों की तरंग ठीक ज्वार-भाटे का रूप लिये होती है। यही वह अवस्था है जबकि उसके साहस को शारीरिक बल का भरपूर सहयोग मिलता है। बस वह तूफान की तरह आगे बढ़ता है। किधर बढ़ता है यह निर्भर करता है उसकी पृष्ठभूमि पर, समझ और आत्मिक उत्थान पर। यही वह अवस्था है जो कभी भगत सिंह के रूप में उभरती है तो कभी रंगा और बिल्ला का रूप ले लेती है, कभी फ्रेंच रिवोल्यू-शन की प्रणेता बनती है तो कभी हिप्पी कल्ट का विस्तार करती है।

इतिहास उठाकर देखें तो पता चलता है कि दुनिया का हर क्रांतिकारी कदम, हरेक नई खोज, साहस के नये आयाम और निर्माण की हरेक मंजिल इस अवस्था से जुड़ी होती है। वस्तुत: युवा शक्ति ही किसी भी देश का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है जिस पर उसका विकास निर्भर करता है। सच पूछो तो युवा शक्ति एक भारी सैलाब है, उफनती हुई नदी की तरह है जो अगर अनियंत्रित है तो बाढ़ और विनाश की तबाही मचा देती है। अगर नियंत्रित करके उसे सही दिशा दे दी जाये तो वह उत्पादन और निर्माण का आधार बनती है।

विश्व परिवर्तन के सन्दर्भ में युवा शक्ति की अहम भूमिका पर विचार करने से पूर्व युवावस्था एवं विश्व परिवर्तन इन दो शब्दों की विवेचना करना उचित होगा।

जैविक दृष्टि से युवावस्था में देह के सभी अंगों का पूर्ण विकास होता है। दूसरे शब्दों में, उसकी सभी कर्मेन्द्रियाँ सर्वाधिक क्रियाशील होती हैं। ये कर्मेन्द्रियाँ ही, वस्तुत: विविध मानवीय संवेगों और उनके प्रतिफलों में सहयोगी बनती हैं। देह के विकास और मानवीय विकारों का घनिष्ट सम्बन्ध है। कहने को आवश्यकता नहीं कि काम का ज्वार मानव में युवा शक्ति में ही सर्वाधिक होता है। शारीरिक बल उसके अहंकार में घी की आहुति का कार्य करता है। उस व्यक्ति की अहंकार जनित इच्छाओं में अगर कोई भी बाधा उप-स्थित हो तो उसके क्रोध का ज्वालामुखी फट पड़ता है। उस देह-केंद्रित व्यक्ति में भौतिकवादी सुखों की हविश पैदा हो जाती है जिसे पूरा करने को धन चाहिए और तब उसकी ज्ञान शक्ति लुप्त हो जाती है। उस समय उसे दवाइयों और खाद्य-पदार्थों में भी मिलवाट करने में हिचक नहीं होती। देह-जनित विकारों का यह स्वरूप सारे समाज को दो भागों में बाँट देता है—एक "हैव्ज़" का ग्रुप, दूसरा "हैव नाटस" का। हैव्ज़ ग्रुप का जीवन दर्शन होता है धन, शक्ति और सामर्थ्य। उनके जीवन यापन से जुड़े रहते हैं क्लब और अट्टालिकाऐं जब कि "हैव्जनाट" के हिस्से में आते हैं फ्रसट्रेशन, नारे, हड़ताल और तोड़-फोड़। यह सत्य सर्वत्र व्याप्त है। व्यक्ति के स्तर पर अगर दवाइयों में मिलावट के रूप में है तो राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हथियारों के निर्माण और आर्थिक साम्राज्यवाद

के रूप में उपस्थित है। कैसे दोहरे मान दंड हैं हमारे, निशस्त्रीकरण की तख्ती गले में लटकाकर दिन-रात एटम और हाइड्रोजन बम बनाते रहते हैं।

अब ज़रा विचार करें विश्व परिवर्तन पर। विश्व परिवर्तन का आखिर मतलब क्या है ? क्या गरीबी अमीरी की खाई को पाटना, क्या सारे देशों में समान सुख सुविधाऐं उपलब्ध कराना और क्या सर्वत्र विकास योजनाऐं क्रियान्वित करना। नहीं, विश्व-परिवर्तन का वास्तविक अर्थ है उन कारणों को दूर करना जो इस विश्व को, समाज को और मानवता को दुखी बनाने में आधार भूत भूमिका अदा करते हैं। आज सारा विश्व विनाश के कगार पर है। करोड़ों लोगों की एक जून की रोटी की कीमत पर परमाणु अस्त्रों का निर्माण हो रहा है, सीमाऐं संगीनों से "सील" कर दी गयी हैं, मध्य पूर्व, लैटिन अमेरिका और दक्षिणी पूर्वी देशों में हर रोज़ युद्ध भड़क उठते हैं, बड़े राष्ट्र छोटे राष्ट्रों को निगल जाना चाहते हैं। कहीं काली और गोरी चमड़ी का संघर्ष है तो कहीं पूँजीवाद और साम्यवाद के नाम पर मानव-मानव के रक्त का प्यासा हो रहा है। आखिर क्यूँ है यह सब ? जब दुनिया के दुखों की आर्थिक संकटों की बात चलती है तो हम हामी होते हैं पूँजीवाद के, समाजवाद के, साम्यवाद के और न जाने किन-किन वादों की दुहाई देते हैं। पर सब वादों और व्यवस्थाओं के मूल में जो व्यक्ति है उसकी बात नहीं करते। जबकि सचाई यह है कि दुनिया को बदलने के लिए स्वयं मानव को बदलना होगा, उसकी प्रवत्तियों को बदलना होगा, उसके जड़मूल में बसे विकारों को दूर करके संस्कारों में परिवर्तन लाना होगा। और इस काम की शुरूआत व्यक्ति से होगी। आखिर व्यक्ति ही तो व्यापक रूप में समाज या देश का रूप लेता है। अतः दुनिया को बदलने का वास्तविक अर्थ है मानव की मनोवृति को बदलना, विकारों से रहित, पवित्रता से परिपूर्ण एवं आत्मिक आधार पर विश्व बन्धुत्व की भावना से युक्त मानवता का विकास करना।

हम सब कहते हैं और मानते हैं कि सतयुग में सर्व प्रकार के आनन्द थे, दूध-दही की नदियाँ बहती थीं, लोग घरों में ताले नहीं लगाते थे। क्या सचमुच ऐसा था ? वस्तुतः ये सब प्रतीक है उस समय की मानवता के। उस समय मानव विकार रहित था, लोभ, अहंकार और क्रोध आदि के वशीभूत होकर अमानवीय कार्य नहीं करता था। सीधा, सच्चा और प्रेममय जीवन था उसका। तब सचमुच मानव जीवन अविरल आनंद का श्रोत था। वही तो था सतयुग। पृथ्वी उस समय स्वर्ग के समान थी। उस समय के लोगों के आभूषण और स्वर्ण जटित वस्त्र इस बात के प्रतीक हैं कि उस समय भारी समृद्धि थी। दूसरे शब्दों में वे सभी भौतिक साधनों का भरपूर उपभोग करते थे परन्तु इंटरनल डिटैचमेंट के साथ यानी आंतरिक विरक्ति रखते हुए। इसीलिए न किसी प्रकार के विकार थे, न वे खुद दुखी थे और न दूसरों के दुख का कारण बनते थे।

असंतोष, फ्रसट्रेशन या दुखों के मूल में क्या है ? गहराई से विचार करें तो दो कारण उभर कर आते हैं। प्रथम "स्व" की स्थिति के ज्ञान का अभाव तथा द्वितीय, भौतिक साधनों के प्रति लालसा। इन भौतिक साधनों से जितना ज्यादा लगाव, जितनी मात्रा में लालसा, उसी अनुपात में ज्यादा दुख। यह लालसा क्यों बलवती होती है ? कौन पैदा करता है इसे ? गहन विवेचन करें तो पता चलेगा कि इस सबका कारण है मन, इस सबका कारण है आत्म-ज्ञान का अभाव। हमारा अपने बारे में ज्ञान केवल देह तक रहता है और देह की इच्छापूर्ति के लिए सदा हाजिर है मन। बस इस मन पर काबू पाना है और इसके लिए केवल एक ही उपाय है ध्यान, राजयोग।

यह ठीक है कि मनुष्य ने अपनी कार्यक्षमता को बढ़ाने, दूरी को घटाने, समय को बचाने, ठंड तथा गर्मी के प्रकोपों से अपने को सुरक्षित रखने के लिए अनेक प्रकार के साधनों की रचना को है। परन्तु बेहतर है कि उनको साधन के रूप में ही लिया जावे, साध्य के रूप में नहीं। उनका यथा-संभव प्रयोग किया जावे परन्तु तटस्थ भाव से। कहते हैं जनक राजा होते हुए भी योगी थे, विदेह थे। इससे तात्पर्य ही यह है कि उन्होंने आन्तरिक विरक्ति और तटस्थ भाव का इतना विकास कर

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

शरीर-निर्वाह व आत्म-निर्वाह

ब्र. कु. सूरज कुमार, मधुबन, माउन्ट आबू

विनाशी शरीरों की पालना करते-करते ही आत्माओं ने सृष्टि-चक्र पूर्ण कर लिया। शरीरों की पालना में रत आत्माएँ, आत्मा के धर्म को पूर्णतया भूल गई। फल-स्वरूप शरीर निर्वाह आज एक भयानक सिर दर्द बन कर मनुष्य को अनेक कुकृत्य करने के लिए बाध्य कर रहा है। परन्तु अब समय की गति को जानकर और ईश्वरीय ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् हमें अपने जीवन में सन्तुलन बनाना होगा, तब ही हम गृहस्थ में कमल पुष्प समान निर्लिप्त रह कर अपनी सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त कर सकेंगे।

"मनुष्य जीवन", शरीर व आत्मा का मेल है।

जीवन निर्वाह करते मनुष्य इस सत्य को भुला देता है कि उसका ये जीवन, मात्र शरीर नहीं है बल्कि आत्मा व शरीर का मेल है। फलतः मानव निशि-दिन दैहिक भाव में रहते हुए दुःख, अशान्ति, चिन्ता, शोक व दर्द को अनुभव करता है। अतः सर्व प्रथम तो मनुष्य को आत्मिक-भान जागृत करना होगा। इस प्रकार स्पष्ट है कि मनुष्य रात-दिन उसके लिए तो परिश्रम कर रहा है, जो कि वह है ही नहीं, और वह जो कुछ है, उसके लिए उसे क्षणिक भी चिन्ता नहीं है। अथवा यों कहें कि मनुष्य अपने जीवन की अनमोल घड़ियों को केवल देह अर्थ अर्थात दूसरे के लिए ही लगा रहा है। स्व-उन्नति का उसे तनिक भी ख्याल नहीं। अतः श्रेष्ठ मनुष्य वही है जोकि शारीरिक प्राप्तियों के साथ-साथ आत्मिक प्राप्ति भी करे।

शरीर-निर्वाह शरीर के सुख के लिए है, परन्तु आज सभी मनुष्य शरीर-निर्वाह में व्यस्त होते हुए भी सुख चैन से दूर क्यों हैं? उत्तर स्पष्ट है कि सुख-चैन आत्मा के गुण हैं और वे आत्म-निर्वाह से ही प्राप्त होते हैं। आत्म-निर्वाह के बिना एयर कंडिशन (वातानुकल) में बैठे व्यक्ति भी अशान्त और बेचैन देखे जाते हैं। अतः अब आवश्यकता है, आत्म-निर्वाह की।

आत्म-निर्वाह क्या है?

इसका अर्थ है—

- आत्मिक-ज्ञान रूपी धन इकट्ठा करना
- आत्मिक-स्थिति में रहना
- आत्मिक-शक्तियों को बढ़ाना
- सर्व प्राप्तियों के स्रोत परमात्मा से अपना सम्पर्क व सम्बन्ध बनाये रखना
- बुरे कर्मों से बचकर रहना तथा श्रेष्ठ कर्मों का खाता बढ़ाना
- ईश्वरीय सेवा द्वारा २१ जन्मों के लिए शरीर-निर्वाह जमा करना।

अतः प्रत्येक शरीर निर्वाह में लिप्त मनुष्य को इस आत्म-निर्वाह की ओर भी ध्यान देना चाहिए। **शरीर निर्वाह में तो पूरा ही दिन रात लगा दिया जाता है, परन्तु अपने समय का थोड़ा भी हिस्सा यदि मनुष्य आत्म-निर्वाह में लगाये तो उसे मनुष्य जीवन का सच्चा सुख प्राप्त हो सकता है।** अब हम कुछ ऐसी धारणाओं की चर्चा करेंगे, जिन पर ध्यान देने से मनुष्य शरीर निर्वाह में रहते हुए, पूर्णतया आत्म-निर्वाह भी कर सकता है।

धन-वृद्धि के साथ साथ योग की विधि मत भूलो—

इसमें कोई सन्देह नहीं कि जीवन-यापन के लिए धन की वृद्धि में इतना लिप्त नहीं हो जाना चाहिए कि वह उस परम पिता, परम-सत्ता को ही भूल जाए जो सब कुछ देने वाला है। उसे भलने से ही धन का अभिमान आता है और धन का दुरुपयोग भी होता है, अन्यथा यदि मनुष्य यह याद रक्खे कि यह धन उसे परम पिता ने ही दिया है तो उसे यह भी रहेगा कि उसका उपयोग उसके आदेश अनुसार ही करना है।

योग-अभ्यास को एक तरफ रखकर धन-वृद्धि के पीछे भागना मृगतृष्णा तुल्य है और यह बुद्धिमानी

भी नहीं है कि हम अविनाशी सत्ता को छोड़ कर विनाशी वैभवों की ओर भागें। हमें याद रखना होगा कि इस विनाश के काल में धन सम्पूर्ण सुख नहीं देगा और बहुत अविनाशी कमाई जोकि हमने योग की विधि द्वारा जमा की होगी, हमारा साथ देगी व हमें सुख देगी। बाकी सब कुछ राख बन जाऐगी। इसी के साथ-साथ यह भी अटल सत्य है कि जो मनुष्यात्माएँ योग-अभ्यास में वृद्धि करते हैं, अथवा योग-युक्त रहते हैं, उन्हें कभी भी धन की कमी नहीं होती और जो धन-वृद्धि के लोभ में योग को भूल जाते हैं, उन्हें कभी भी तृप्ति नहीं होती। अतः शरीर निर्वाह में रहते हुए हमें अमृत वेले और कर्म के बीच-बीच में भी योग-अभ्यास करते रहना चाहिए, इससे हमें शारीरिक व मानसिक थकावट भी नहीं होगी और सुख-चैन रूपी आराम रहेगा।

मेरी जिम्मेदारी है—इस बोझ को हल्का करो

कौन, किसका जिम्मेदार है, जबकि मनुष्यात्मा अपना-अपना भाग्य लेकर आई है। यह सत्य सिद्धान्त भूलकर यों ही मनुष्य स्वयं को जिम्मेदार समझ कर चिन्तित रहता है। और यह सोचकर कि मेरे इतने बच्चे हैं, मेरा इतना परिवार है, मेरे ऊपर इनकी जिम्मेदारी है, वह रात-दिन उन्हीं की चिन्ता में रहता है और इस प्रकार एक के बाद एक चिन्ता को जन्म देकर वह मौत के मुँह का ग्रास बन जाता है। कितना साधारण विचार है यह। भगवान, जोकि सम्पूर्ण विश्व का जिम्मेदार है, सदा निश्चिन्त है और मनुष्य जोकि चार बच्चों का जिम्मेदार है सदा चिन्तित है। मनुष्य अपने लिए कम, परन्तु दूसरों के लिए अधिक जंजाल बुनता है और प्रत्येक मनुष्य दूसरों के लिए चिन्ता करने का परिणाम भी चख चुका है।

अतः अब आत्म- निर्वाह के लिए अपना ये सब बोझ, उस विश्व रक्षक परमपिता को देकर निश्चिन्त होकर अपनी जिम्मेदारियों को निभाओ और ईश्वरीय प्राप्तियों का खजाना जमा करके अथाह सुख पाओ। सबका रक्षक, सब का परमपिता परमात्मा स्वयं ही है। हम अपनी ही रक्षा नहीं कर सकते तब भला दूसरों की क्या चिन्ता करें। अतः मात्र स्वयं को जिम्मेदार समझकर शरीर निर्वाह में ही व्यस्त रहना समझदारी नहीं है। दूसरों के प्रति अपना कर्त्तव्य करते चलो आत्मिक उन्नति का अपना पूर्ण लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ो।

व्यक्तियों के साथ रहते हुए आत्मिक-भाव रखो

सारे दिन मनुष्यों के साथ रहते हुए उनसे मेरा-पन निकाल दो कि 'ये मेरे हैं', 'ये मेरे मित्र हैं', 'ये मेरे विरोधी हैं', 'ये मेरे दुश्मन हैं'। **बल्कि याद करो कि ये सब आत्माएं भगवान के बच्चे हैं।** यह मेरा-पन ही मन को भारी करता है। अतः जो भी मनुष्य सम्पर्क में आवे, पहले उसे आत्मिक दृष्टि से देखो और फिर व्यवहार में आओ। इससे मन सदा हल्का रहेगा।

हम सभी का ये मरजीवा जन्म है, अतः हमारे सब नाते व रिश्ते अलौकिक हैं। यह अलौकिक जीवन, कर्म-बन्धन का हिसाब नहीं है। इस प्रकार अपने परिवार व रिश्तेदारों को भी अलौकिक ही समझना चाहिए, इससे कभी भी बन्धन महसूस नहीं होगा।

सम्बन्धों को हल्का करो, अविनाशी सम्बन्ध याद करो—

मनुष्य को अपने लौकिक सम्बन्धों के जंजाल में फँसे रहने का पुराना व्यसन है। अब पुरुषोत्तम संगम युग पर, जबकि सच्चे सम्बन्धी, से हमारा नाता जुड़ा है तो दुखदाई सम्बन्धों में अटके रहने का क्या प्रयोजन! अब तो बुद्धिमानी इसी में है कि इन नातों में निमित्त भाव रखकर, **इन्हें हल्का करें और अधिक नाते अब न जोड़ें तथा परमात्मा के अविनाशी नाते को मजबूत करें।** उससे ही सब कुछ प्राप्त करें और उसे ही सब कुछ उपहार दें।

वैभवों में विनाशी भाव रक्खो—

संसार के वैभवों की चकाचौंध कहीं कहीं योगियों के मन को भी हर लेती है। अतः परिवार में रहने वाली **योगी आत्माओं को इन वैभवों को विनाशी भाव से ही देखना चाहिए। अतः वैभव पाने की कामना रखना या भगवान को पाकर भी वैभवों के पीछे भागना, भगवान के बच्चों को** शोभा नहीं देता। हम जानते हैं कि ये वैभव अन्ते दुःख-दाई हैं, अतः ईश्वरीय सुख पाकर और किस सुख की तमन्ना है!

विनाशी वस्तुओं के पीछे हम अपनी अविनाशी स्थिति को नष्ट न करें। और सत्य तो यह है कि वैभवों में अनासक्त भाव रखने से वैभव स्वतः ही

हमारे पीछे भागते हैं, परन्तु महानता इसमें है कि हम उन्हें स्वीकार न करें क्योंकि ये वैभव आत्म-निर्वाह में बाधक हैं।

धन आवश्यक है, परन्तु सब कुछ नहीं

धन ही सब कुछ है, यह कलियुगी मनुष्यों की मान्यता है। परन्तु वे आत्माएँ जो कि कलियुगी कीचड़ से ऊपर उठकर संगम युग में प्रवेश कर चुकी हैं, धन को केवल निमित्त मात्र ही समझते हैं। अथाह धन होते हुए भी लोग परेशान, दुःखी व रोग से व्याकुल पाये जाते हैं। अतः धन आवश्वक तो है, परन्तु सब कुछ नहीं। सब कुछ है ईश्वरीय अनमोल खजाना –अब तो उसे पाने में रात-दिन जुट जाना चाहिए। वही हमारे साथ चलता है।

अवश्य ही धन ईश्वरीय सेवा के लिए भी आवश्यक है, **परन्तु साधना को छोड़कर धन द्वारा की गई सेवा स्थाई नहीं होती।** और ईश्वरीय महावाक्य हैं– "विनाशी साधनों से कभी भी अविनाशी सेवा नहीं हो सकती"। अतः धन हमारे आत्म-निर्वाह व साधना में बाधक न हो –यह हमें ध्यान रखना चाहिए।

जितना जंजाल बुनेंगे, उतना ही फसेंगे, अब मुक्त होने का समय है–

शरीर निर्वाह करते-करते मनुष्य बुरी तरह से जंजाल में फँस चुका है। परन्तु जिन्हें ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त हो चुका है वे जानते हैं कि अब मुक्त होने का समय है। यदि अब भी हम जंजाल बुनते रहेंगे तो निश्चित ही धर्मराज हमें बल पूर्वक मुक्त करेगा। अतः समय के महत्त्व को जानकर आत्म-निर्वाह के अभिलाषी को चाहिए कि **अब अपने रस्सियों को ढीला करें और जाल बढ़ायें नहीं, नहीं तो प्रभु मिलन का संगम यों ही बीत जाएगा।** यदि हम अब इस मुक्त होने के समय स्वयं को मुक्त नहीं करेंगे तो हमें भक्तिकाल में मुक्ति के लिए कठिन तपस्याएँ करनी पड़ेंगी।

विभिन्न दृश्यों में दृष्टा भाव रक्खो–

ये विश्व एक विशाल खेल है। इसे खेल की न्याई देखने से आत्मा को हर्ष होता है और संसार बन्धन नहीं लगता। और यदि यह भूलकर विभिन्न दृश्यों को देखने लग जाऐंगें तो वे ही दृश्य दुःख, अशान्ति व उलझन को जन्म देंगे। अतः शरीर निर्वाह के समय **आने वाले विभिन्न दृश्यों को दृष्टा भाव से देखो, तब ही जीवन में आत्म-निर्वाह का सन्तुलन रह सकेगा।** यदि प्रत्येक घटना के बारे में चिन्तन करेंगे और प्रश्न करेंगे तो मंजिल दूर रह जाऐगी।

आत्मा के सिद्धान्तों के विरुद्ध न जाओ–

कलियुग में शरीर निर्वाह अर्थ अनेक अनुचित साधन अपनाने पड़ते हैं जोकि आत्मा के स्वभाव के प्रतिकूल होते हैं, फल स्वरूप आत्मा बेचैन हो उठती है। मन उसे स्वीकार नहीं करता। परन्तु परिस्थितियों-वश मनुष्य पुनः पुनः वैसा ही करता है। जबकि वह **सत्य सिद्धान्त है कि अनुचित तरीकों से प्राप्त धन, सुखदाई नहीं होता। अतः आत्म निर्वाह के लिए जितना हो सके इन अनुचित कर्मों से बचना चाहिए।** क्योंकि वो लोग तो हमारे साथ नहीं जाऐगें, जिनके लिए हम ऐसा करते हैं, परन्तु पापों की गठरी ही हमारे सिर पर होगी।

हम तपस्वी हैं, यह न भूलो–

चाहे कोई, गृहस्थ में हो या व्यवहार में, उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम तपस्वी हैं। हमारा मुख्य कर्म योग तपस्या है। बाकी सब कुछ निमित्त मात्र है। इस स्मृति से जीवन में, त्याग, सादगी व अनासक्ति की भावना जागृत रहेगी और हम दूसरों को देखकर साधनों में लिप्त नहीं रहेगें और साधनों में रहते भी साधना को नहीं भूलेगें। और जहाँ भी कठिनाई हो 'श्री मत' लें।

अतः इस पुरुषोत्तम संगम युग पर ज्ञानवान मनुष्य को धनोपार्जन में ही इतना तल्लीन नहीं हो जाना चाहिए कि वह अविनाशी प्राप्तियों को ही भुला दें। न रोज ज्ञान-अमृत पान करें और न योग अभ्यास। और अपने शरीर निर्वाह में ही इतना व्यस्त हो जाए जो आये हुए प्रभु का सम्मान करना भी भूल जाए। जरा सोचें–यह कैसी समझदारी होगी कि भगवान स्वयं ५००० वर्ष के बाद परमधाम से हम आत्माओं के लिए आयें और हम उसकी ओर ज़रा भी ध्यान न दें, हम कहें कि हमें फुर्सत नहीं। तब सोचो, भला ऐसे मनुष्य की क्या गति होगी!

भोजन की शुद्धता

लेखिका : ब्रह्माकुमारी चक्रधारी, दिल्ली

प्यारे बच्चो, ज़माने में काफ़ी परिवर्तन आ गया है। परिवर्तन तो सदा होता ही आया है परन्तु पिछले ५० वर्षों में लोग पुरानी नैतिक धारणाओं को छोड़-छोड़कर अधिकाधिक भौतिकवादी होते गये हैं। इस विषय में हम आपको एक छोटी-सी कहानी बताते हैं जिससे आपको मालूम होगा कि भक्ति मार्ग में खाने-पीने के बारे में लोगों की क्या धारणाएँ रही हैं और बाद में लोग उन्हें कैसे छोड़ते गये हैं। यहाँ तक कि यदि आज हम किसी को खान-पान के बारे में पवित्रता की बात कहते हैं तो वे इसमें पूर्ण आस्था भी नहीं रखते और इसलिए आचरण भी नहीं करते !

कहानी इस प्रकार है कि जंगल में एक साधु रहता था। उसकी प्रभु से बहुत प्रीति थी। वह अपना काफ़ी समय भक्ति, पूजा, अध्ययन और ध्यान में लगाता था। वन के एकान्त और शान्त वातावरण में वह प्रभु के गुण गाता था और वन उपवन के फल इत्यादि से जीवन व्यतीत किया करता था।

एक बार वह एक कमण्डल में पानी भरकर और कुछ फल रखकर प्रभु के ध्यान में बैठ गया। ध्यानावस्था में उसने प्रभु को ये फल भी समर्पित किये। वह आँखें मूँदे हुए प्राणायाम चढ़ाकर अचेत हुआ-सा बैठा ही था कि उस नगर का राजा अपने नौकर के साथ वहाँ आ पहुँचा। बात यह थी कि राजा अपने नौकर को साथ लेकर हिरणों के शिकार के लिए निकला था और हिरणों के पीछे भागते-भागते उसे बड़ी सख्त प्यास लग गई थी परन्तु वह शहर से काफ़ी दूर जंगल के बीच में पहुँच गया था और वहाँ कुछ पानी नहीं दिखाई देता था। उपर एक वृक्ष पर चढ़कर उसने देखा कि दूर एक कुटिया दिखाई दे रही थी। वे दोनों उस ओर चल पड़े। रास्ते में राजा ने नौकर को कहा कि वह इधर-उधर पानी की तलाश करे और अगर पानी मिल जाए तो उसे लेकर कुटिया पहुँच जाए और वह स्वयं भी वहाँ कुटिया में पहुँच जाएगा।

नौकर तो पानी की तलाश में निकल गया और राजा कुटिया में जा पहुँचा। आख़िर राजा ने देखा कि वह साधु कुटिया के बाहर बैठा हुआ है। आँखें बन्द किए हुए ध्यान में मग्न है। कुछ समय तो राजा कुटिया में साधु को इन्तजार में बैठा रहा। परन्तु जब उसने आँखें नहीं खोली तो राजा उसके पास गया और वहाँ पानी का कमण्डल देखकर उसकी प्यास और भड़क उठी आख़िर उससे न रहा गया। उसने कण्डल लेकर हाथों को पात्र बनाकर पानी पी लिया और अपने नौकर को भी, जो इसी बीच पहुँच गया था, पानी पिला दिया। कमण्डल खाली होने पर राजा ने कमण्डल को उस पानी से भर दिया जो अब उसका नौकर ले आया था।

राज़ा और नौकर दोनों कुटिया में आकर बैठ गए और कुछ देर बाद जब साधु की आँख खुली तो अपनी कुटिया में अतिथि देखकर उनकी सेवा में फल ले गया और उनसे उनका विवरण पूछा। राजा और उसके नौकर ने वे फल भी खा लिए।

साधु ने राजा से पूछा कि उनका वहाँ कैसे आना हुआ ? राजा द्वारा बताये जाने पर साधु ने कहा—

(शेष पृष्ठ २६ पर)

अमलनेर में जनकल्याण सेवा मंडल द्वारा निमन्त्रण पर प्रभु संदेश देती हुई ब्र० कु० मीनाक्षी बहिन।

शाहबाद (कर्नाटक) में आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह मे अपने विचार रखते हुए ब्र० कु० प्रेम सिंह जी।

गोंदिया में आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन पश्चात् प्रवचन करती हुई ब्र० कु० मन्जू बहिन

अलिसब्रिज-अहमदाबाद सेवाकेन्द्र की ओर से आयोजित 'युवा जागृति प्रदर्शनी' के उद्घाटन समारोह में प्रवचन करते भ्राता भूपतभाई वडादरीया जी

बराड़ा में उप-सेवाकेन्द्र का उद्घाटन करते हुई ब्र० कु० अचल थी।

मंगलोर में लक्षादीपोत्सव पर लगाई आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता वीरेन्द्र हेगडे, धर्माधिकारी धर्मस्थल द्वारा सम्पन्न हुआ। ब्र० कु० भाई बहनें साथ में हैं

चित्र में, बागली सेवा केन्द्र हाटपीपल्या में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन एस० डी० ओ० रेवन्यु द्वारा किया जा रहा है।

ग्वालियर 'जैन नवयुवक संघ' द्वारा आयोजित 'सर्व धर्म सम्मेलन' की अध्यक्षा एवं सांसद, राजमाता विजय राजे सिंधिया भाषण करती हुई। साथ में ब्र० कु० शैला तथा अन्य धर्मों के प्रतिनिधि बैठे हैं।

अहमदाबाद-नारायणपुरा सेवा केन्द्र द्वारा वृद्धाश्रम में आयोजित राजयोग प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर प्रवचन करती हुई चन्द्रिका बहन।

भूपाल में, अरेरा कालोनी स्थित जोनल कार्यालय में हुए राजयोग अभ्यास में पधारे राजकीय अधिकारी गण।

सतना में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन होने पश्चात् ब्र० कु० निर्मला भ्राता डी० एस० माथुर, कलैक्टर तथा अन्य को ईश्वरीय सन्देश देते हुए।

बम्बई (बोरोवली) में हुए आध्यात्मिक कार्यक्रम में ब्र० कु० प्रतिभा भूतपूर्व डाकू तथा अब राजयोगी पंचम सिंह का परिचय देते हुए

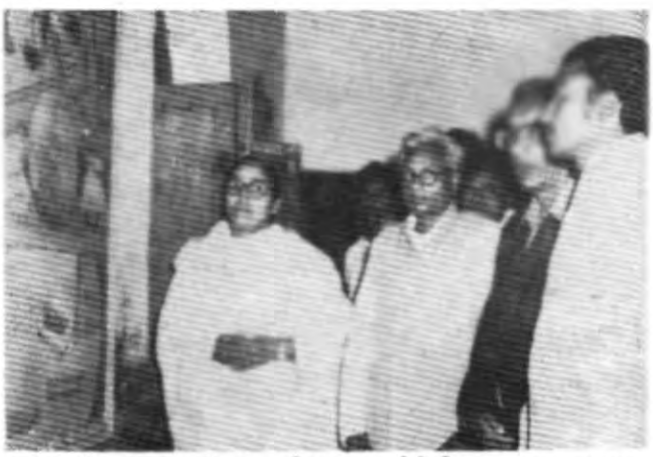

दुर्ग (म० प्र०) में आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर ब्र० कु० कमला महापौर भ्राता आलमदास गायकवाड़ को चित्रों की व्याख्या करते हुए।

सब के जो बाबा हैं उनके नाम, रूप और कर्त्तव्य कौनसे हैं?

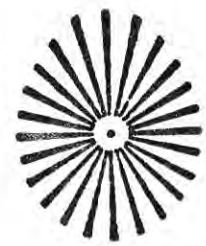

(शिवरात्रि से सम्बन्धित)

शिवरात्रि के महत्वपूर्ण अवसर पर एक विचित्र बात हमें याद हो आती है। बात यह है कि भारत में स्थान-स्थान पर 'शिवलिङ्ग' नाम से जो प्रतिमायें बनी हुई हैं उन्हें यहाँ आने वाले विदेशी भी देखते हैं और यहाँ के बहुत-से लोग तो उसकी पूजा भी करते हैं। परन्तु, वे इस प्रतिमा के न्यारे रूप को देखकर और इसके 'त्रिभुवनेश्वर', 'मुक्तेश्वर', 'पापकटेश्वर' आदि-आदि नाम सुनकर यह नहीं सोचते कि यह विचित्र प्रतिमा किसका स्मरण-चिह्न है। एक उदाहरण द्वारा इस बात को स्पष्ट करना अधिक ठीक रहेगा।

देहली में अगर आप एक बस में यात्रा करेंगे तो आप देखेंगे कि बस का कन्डक्टर स्टाप आने पर उच्च स्वर में यों कहता है—"किंग एडवर्ड पार्क!··· तिलक ब्रिज!···राजघाट अथवा गांधी समाधि!···" 'एडवर्ड पार्क' का नाम सुनते ही सब यात्री समझ जाते हैं कि इंगलैंड के सम्राट, एडवर्ड का यहाँ पर बुत होगा अथवा यह बाग एडवर्ड की स्मृति में बनाया गया होगा। 'तिलक ब्रिज'—यह नाम सुनते ही मन में यह स्मरण हो आता है कि तिलक जी गीता-प्रेमी थे, उन्होंने गीता पर एक विद्वतापूर्ण टीका लिखी और देश की स्वतन्त्रता के संग्राम में विशेष भाग लिया। इसी प्रकार, राजघाट या गांधी समाधि का नाम सुनते ही मनुष्य का मन यह कह उठता है कि गांधी जी स्वतन्त्रता-संग्राम के एक अग्रगण्य सेनानी थे जिन्हें 'बापूजी' के नाम से भी लोग पुकारते थे और जिन्हें आज लोग 'राष्ट्रपिता' (The Father of Nation) की उपाधि देते हैं।

अब इन उदाहरणों को ध्यान में रखते हुए सोचिये कि आज जब कोई विदेशी अथवा भारतीय किसी मन्दिर में शिवलिङ्ग की प्रतिमा देखता है तब भला उसके मन में कौन-सा दिव्य इतिहास याद हो आता है? क्या वे जानते हैं कि शिव जी ने भारत को दुःख एवं अशान्ति से कब स्वतन्त्रता दिलाई जिसके कारण उनको 'मुक्तेश्वर' कहा गया है? उन्होंने किस प्रकार सबका कल्याण किया कि उन्हें लोग 'शिव' नाम से याद करते हैं? विचार करने पर आप इसी निर्णय पर पहुँचेंगे कि लोगों की स्मृति-पट पर शिव-लिंग के बारे में कोई भी स्पष्ट कहानी अथवा ऐतिहासिक वार्ता अंकित नहीं है। जब लोग सरदार पटेल, शिवाजी, महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक आदि-आदि के बुत (Statue) देखते हैं तो वे उन्हें प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्ति मानते हैं और वे झट उनकी आकृति से उनके बुत को भी पहचान जाते हैं और उनके कर्त्तव्य भी उन्हें याद हो आते हैं, परन्तु शिवलिंग को तो कोई दैहिक आकृति है नहीं और न ही प्राप्त इतिहास में उसका कुछ उल्लेख है, इसलिये लोग शिव के बारे में स्पष्ट रूप से कुछ भी नहीं जानते।

आप देखिये कि टूरिस्ट गाइड (Tourist Guide) जब यात्रियों को देहली में राजघाट और कुतुबमीनार और आगरा में ताजमहल आदि-आदि स्थानों पर ले जाते हैं तो वे उनसे सम्बन्धित व्यक्तियों का रुचिकर इतिहास यात्रियों को बताते हैं। अब यदि वे यह जानते होते कि शिवलिंग किस परम माननीय की प्रतिमा अथवा दिव्य स्टेच्यू (Statue) है और उसको 'अमरनाथ', 'सोमनाथ', 'मुक्तेश्वर', आदि-आदि नाम क्यों दिये गये हैं तो वे अन्य सभी स्मरण-स्थल अथवा स्मारकों से पहले तो देशी एवं विदेशी यात्रियों को शिव-समाधि अर्थात् शिवलिंग के निकट ले जाते और उसका मधुर एवं महत्त्वपूर्ण परिचय देते। लेकिन शिव का तो परिचय देने वाला कोई भी

टूरिस्ट गाइड नहीं है। शिव की प्रतिमा पहले-पहल किसने स्थापित की, शिवरात्रि का उत्सव क्यों मनाया जाता है, शिव के विशेष क्या कर्त्तव्य हैं?– इन बातों पर तो कोई भी विवेक-संगत प्रकाश नहीं डालता, तभी तो आज शिवरात्रि का त्योहार बहुत थोड़े-से लोग मनाते हैं।

परमात्मा शिव का परिचय क्यों ज़रूरी है ?

शिव की महिमा में लोग गीत गाते हुए कहते हैं—'तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो.....।' प्रश्न उठता है कि उस एक के साथ हमारे सभी सम्बन्ध कैसे हैं?' फिर, भक्त लोग कहते हैं—'ओम् नमो शिवाय।' इससे स्पष्ट है कि शिव कोई सामान्य रूप से हमारा पिता नहीं है बल्कि वह सबका परमपूज्य है। यदि कोई छोटा बच्चा अपने पिताजी के साथ शिव मन्दिर के निकट से गुज़रे और बच्चा शिवलिङ्ग की ओर इशारा करते हुए पूछे कि—'पिताजी, यह क्या है?' तो पिताजी जवाब देंगे—'यह भगवान् की प्रतिमा है। इसके आगे माथा टेको।' परन्तु जिस भगवान् को—'त्वमेव माताश्च पिता..... ..' कहते हैं, उसकी जीवन-कहानी को न जानना, यह कैसी विचित्र बात है! लौकिक माता-पिता का तो परिचय सबको होता है, परन्तु जिस पिता के नाम ही हैं—'मुक्तेश्वर', 'पापकटेश्वर', 'त्रिभुवनेश्वर'...'—उस पिता को न जानना, यह कितनी बड़ी भूल है!

आज मनुष्य का जीवन खोखला क्यों है ?

मनुष्य बाज़ार में जाता है तो देखता है कि किसी जगह पर यह साईन बोर्ड (Board) लगा है—'श्याम लाल आर्चीटेक्ट (Architect)।' दूसरी दुकान पर लिखा है—'मनमोहन डेन्टिस्ट (दाँतों का डाक्टर)।' तीसरी दुकान पर लिखा है—'इलेक्ट्रीशियन'—तो वह इन-इन व्यवसाय वालों को याद रखता है ताकि अगर दाँतों में कभी दर्द हो तो वह उस डाक्टर के पास जाकर इलाज करायेगा। जब मकान का नक़्शा बनवाना होगा तो उस आर्चीटेक्ट के पास जाकर नक़्शा बनवा आयेगा और अगर बिजली-सम्बन्धी कोई कार्य कराना होगा तो उस इलेक्ट्रीशियन के पास पहुँचेगा। परन्तु, जैसे उन-उन व्यक्तियों के वह-वह व्यावसायिक नाम (Occupational names) हैं, वैसे शिव के तो ऐसे अनेक कर्त्तव्य-वाचक नाम हैं जिनसे सिद्ध होता है कि शिव दुःखहर्त्ता, सुखकर्त्ता, पापों से मुक्त करने वाले, मनुष्य का कल्याण करने वाले, अमृत पिलाने और काल कंटक तथा संकट दूर करने वाले हैं। तब भला मनुष्य शिव के इन नामों रूपी साईन बोर्डों (Sign Boards) की ओर क्यों नहीं ध्यान देता? वह परमात्मा शिव के कर्त्तव्यवाचक नामों को जानते हुए भी उसके पास क्यों नहीं पहुँच पाता? जबकि आज वह दुःखी है और सुख चाहता है तो वह परमपिता शिव से सुख क्यों नहीं प्राप्त करता? शिव के बारे में तो उक्ति प्रसिद्ध है कि—'शिव के भण्डारे भरपूर, काल कंटक दूर'—तब मनुष्य अपने काल-कंटक दूर करने और भण्डारे भरपूर करने का यह उपाय क्यों नहीं करता? यदि उसे यह परिचय होता तो आज रौनक ही कुछ और होती। यदि उन्होंने उस कल्याणकारी परमपिता का हाथ पकड़ा होता तो आज भारत की यह दशा थोड़े ही होती? स्पष्ट है कि उसे यह ज्ञान ही नहीं है कि—'परमात्मा शिव कहाँ हैं और उनके पास कैसे पहुँचना है? अतः स्पष्ट है कि मनुष्य को परमात्मा शिव का परिचय प्राप्त करने की आवश्यकता है ताकि उसके दुःखों का अन्त हो और उसे सम्पूर्ण सुखों की प्राप्ति हो।

'शिव' नाम किसका है और शिवलिङ्ग किसकी प्रतिमा है ?

आप जानते होंगे कि शिव को 'स्वयंभू' भी कहते हैं, क्योंकि शिव को किसी ने जन्म नहीं दिया बल्कि वह अनादि हैं। उनकी स्मृति में 'त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव ....' आदि-आदि शब्दों से यह स्पष्ट है कि वे तो सर्व-आत्माओं के माता-पिता हैं, उनके कोई माता-पिता या जन्म देने वाले नहीं हैं। शिव 'त्रिभुवनेश्वर' हैं, तीनों लोकों के मालिक हैं, उनसे कोई बड़ा भी नहीं है जो उनका नामकरण करे। अतः जो जन्म ही नहीं लेता, जिनके माता-पिता भी नहीं हैं उनका नाम हम मनुष्यों की तरह व्यक्तिवाचक अथवा संज्ञावाचक तो हो नहीं सकता। हम मनुष्यों का नाम तो दैहिक जन्म लेने पर हमारे

माता-पिता या हमारे बुजुर्ग रखते हैं परन्तु शिव की प्रतिमा से स्पष्ट है कि शिव की तो कोई देह ही नहीं है, न कोई उनका दैहिक जन्म होता है, जभी तो वे 'स्वयंभू' कहलाते हैं। अतः यह 'शिव' नाम कर्त्तव्यवाचक है। इसे हम एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करेंगे।

'महाराजा' शब्द पर विचार कीजिये। यह शब्द उस व्यक्ति के लिये प्रयोग होता है जो किसी देश का शासक हो अर्थात् जिसके अधीन कोई प्रजा हो और कोई देश या भूमि भी हो। स्पष्ट है कि यह शब्द कर्त्तव्यवाचक है अथवा यह एक उपाधि है। इसी प्रकार 'शिव' शब्द भी कर्त्तव्य-बोध कराता है। जो जगत् का कल्याण करता है, उसी का यह दिव्य अथवा पारमार्थिक नाम 'शिव' है।

'कल्याण' से क्या अभिप्राय है। मनुष्य को जिस अवस्था में न उसे रोग हो, न शोक हो, न काल हो, न हानि, न संकट हो, न विक्षेप—उसकी उस अवस्था को 'कल्याण की अवस्था' कहेंगे। अतः स्पष्ट है कि जो स्वयं कल्याण स्वरूप है और कल्याण करता है वह स्वयं अवश्य ही रोग, शोक एवं दुःख-अशान्ति से सदा न्यारा होगा और शान्ति एवं आनन्द का सागर तथा सर्वशक्तिमान् होगा, तभी तो वह जगत् को सुख एवं शान्ति दे सकता होगा और उनके संकट एवं कष्टों का हरण कर सकता होगा। फिर, वह ज्ञानस्वरूप एवं परिपूर्ण भी होगा क्योंकि सब-कुछ जानने वाला ही तो कल्याण का कर्त्तव्य कर सकता है। अतः स्पष्ट है कि 'शिव' परमपिता परमात्मा ही का दिव्य नाम है क्योंकि परमात्मा ही ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर, आनन्द का सागर और सर्वशक्तिमान है। परन्तु देखिये, यह कैसे आश्चर्य की बात है कि आज लोग कहते हैं कि परमात्मा का कोई नाम ही नहीं है। जो सबसे अधिक नामवर है, उसका नाम ही न मानना—यह कैसी विडम्बना है! जिसका निशान (शिवलिङ्ग के रूप में स्मरण-चिह्न) है, उसका रूप तो अवश्य होगा ही क्योंकि किसी वस्तु का नाम-निशान न मानना तो गोया उसका अस्तित्व भी न मानना है। हाँ, जिनके मन में परमात्मा की याद नहीं है, उनकी दृष्टि में तो परमात्मा का कोई नाम-निशान नहीं है क्योंकि आप देखेंगे कि व्यवहार-क्षेत्र में भी जब कुछ मित्र-सम्बन्धी किसी व्यक्ति को भुला देते हैं तो वह व्यक्ति उन्हें उलाहना देते हुए कहता है—"आपकी लिस्ट में तो हमारा नाम ही नहीं है।" भाव यह है कि आप तो हमारा कभी नाम ही नहीं लेते। यदि किसी का कोई स्मरण-चिह्न, फ़ोटो आदि न रक्खा जाय और उसे किसी भी अवसर पर बुलाया अथवा याद भी न किया जाय तो वह व्यक्ति भी उपालम्भ देते हुए कहता है—"अजी, आपके पास तो हमारा निशान और पता भी नहीं है। आपने तो हमारा नाम-निशान भी मिटा दिया है!" इस मुहावरे को अथवा भाषा के प्रयोग को ध्यान में रखते हुए कहना होगा कि परमात्मा का नाम और रूप है तो सही परन्तु चूँकि आज लोगों के मन में उसकी स्मृति नहीं है, उसके प्रति वह पहले-जैसी श्रद्धा नहीं है और चूँकि उन्होंने उसे भुला-सा दिया है, इसी अर्थ में कहा गया होगा कि—उसका कोई नाम ही नहीं है याने नाम-लेवा नहीं है। व्यवहार में भी जब हम किसी को उलाहना देते हुए ऐसा कहते हैं कि—"आपके पास तो शायद हमारा नाम और पता भी नहीं है" तो हमारा भाव यही होता है कि आप हमें कभी बुलाते नहीं और हमें याद नहीं करते, पत्र इत्यादि नहीं लिखते। अतः यदि यथार्थता की दृष्टि से देखा जाय तो परमात्मा का तो सबसे ऊँचा और प्रातः स्मरणीय नाम है, परन्तु लोगों ने आज उसे भुला दिया है।

शिवलिङ्ग वास्तव में शिव ही का तो स्मरण-चिन्ह है। शिवलिङ्ग का जो आकार है, उससे यह तो स्पष्ट है कि यह किसी देहधारी की अर्थात किसी मनुष्य या देवता की प्रतिमा नहीं है बल्कि ज्योति-स्वरूप परमात्मा की यादगार है क्योंकि एक परमात्मा ही हैं जिनकी कोई देह नहीं है। शिवलिङ्ग के जो अन्य नाम—त्रिभुवनेश्वर, मुक्तेश्वर, सर्वेश्वर, गोपेश्वर, रामेश्वर, विश्वनाथ, त्रयम्बकेश्वर, त्रिमूर्त्ति (अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु और शंकर के भी रचयिता) हैं, वे किसी मनुष्य या देवता के तो हो ही नहीं सकते। परन्तु, कितने आश्चर्य की बात है कि फिर भी बहुत से लोग कहते हैं कि—परमात्मा का कोई रूप नहीं है! परमात्मा का यदि कोई रूप नहीं है तो भक्त उसके दर्शनों की कामना क्यों करते हैं, लोग उसके

साक्षात्कार के लिये क्यों तरसते हैं और उसके दिव्य प्रत्यक्ष के लिये 'काशी करवट' खाने के लिये भी क्यों तैयार हो जाते हैं ? व्यवहार-क्षेत्र में प्रायः ऐसा नहीं होता कि घर में पिताजी का फ़ोटो लगा हो और बच्चा कहे कि—'पता नहीं यह किस का फोटो है।' ऐसा तो कोई अनाथ ही शायद कह सकता है। कोई बच्चा कभी यह भी नहीं कहता कि—"मेरे पिता का कोई नाम भी नहीं और रूप भी नहीं।" हाँ, यदि बचपन से वह पिता से बिछुड़ गया हो तब वह ऐसा कह सकता है कि मैं अपने पिता का नाम या रूप नहीं जानता। परन्तु आज कितने आश्चर्य की बात है कि मनुष्य कहते हैं कि हमारे परमपिता (परमात्मा) का कोई नाम या रूप नहीं है। किसी मनुष्य के बारे में हम तभी यह कहते है कि—"उसका तो कोई नाम-निशान भी नहीं है" जब वह मनुष्य लापता अर्थात् गुम हो गया हो या जब हम उससे रुष्ट एवं चिड़े हुए हों। परन्तु परमात्मा के बारे में ऐसा कहना अज्ञानता और दृष्टता का प्रतीक है।

शिव का रूप वृहद् बिन्दु के समान क्यों ?

कई लोग कहते हैं कि—"परमात्मा शिव स्वयं तो निराकार हैं और सारे मण्डल में व्यापक हैं; शिवलिंग केवल उनका प्रतीक है।" वे कहते हैं कि—"चूँकि निराकार और सर्वव्यापक परमात्मा को याद करना असम्भव है, अतः निराकार परमात्मा की उपासना की सुविधा के लिये यह अशरीरी मण्डलाकार रूप बनाया जाता है।" परन्तु वास्तव में उनकी यह मान्यता ग़लत है। सत्यता तो यह है कि सभी आत्मायें सूक्ष्मातिसूक्ष्म, ज्योतिस्वरूप, अणुरूप अथवा बिन्दु रूप हैं और शिव उन सभी में से परम अर्थात् सर्वश्रेष्ठ हैं, परन्तु हैं वे भी ज्योति-बिन्दु रूप ही। बिन्दु मण्डलाकार तो होता ही है। ज़ीरो (Zero) अथवा बिन्दु को सदा मण्डलाकार रूप में ही अंकित किया जाता है। चूँकि बिन्दु-जितने परिमाण वाली कोई प्रतिमा तो बन नहीं सकती, अतः भक्ति एवं पूजा के लिये उनकी प्रतिमा एक बड़े मण्डल के आकार वाली बनायी जाती है।

बहुत-से लोग जानते हैं कि शास्त्रों में, उपनिषदों में, आत्मा को 'अंगुष्ठाकार' कहा है,* परमात्मा को भी अंगुष्ठ मात्र माना है। अंगुष्ठाकार अथवा मण्डलाकार—बात एक ही है। बिन्दु रूप होने के कारण ही शिव-पिण्डी को अंगुष्ठाकार अथवा मण्डलाकार बनाया जाता है। शिव पुराण में शिव-लिंग को स्थापना में जो विधि-विधान लिखा है, उसमें भी यही बताया गया है कि पूजा के लिये जिस शिव-प्रतिमा की स्थापना की जाय वह पूजक के अंगुष्ठ* के बारह गुणा अथवा सोलह गुणा अथवा इतने गुणा हो। कहने का भाव यह है कि उसका माप अंगुष्ठ ही का कोई-न-कोई गुणा होना बताया गया है। यह विधान भी इस बात को प्रमाणित करता है कि आत्मा और परमात्मा को अंगुष्ठाकार मानने के कारण ही पूजा की सुविधा के लिये बनाये गये शिव-लिंग का रूप अंगुष्ठाकार तथा अंगुष्ठ-परिमाण से ही गुणित कोई माप होता है। ग्रन्थों में शिव को जव-जैसा अथवा ओले के आकार वाला भी कहा गया है। इससे भी सिद्ध है कि शिव का वास्तविक रूप ज्योतिमय बिन्दु के रूप सदृश होने के कारण ही उस की प्रतिमा इस प्रकार बनायी जाती है।

फिर, आप देखेंगे कि शिव का बिन्दु रूप होने के कारण 'शिव' शब्द भी बिन्दु का पर्यायवाचक हो गया है। भारत के कई प्रांतों में ज़ीरो (Zero) अथवा बिन्दु का अंक आने पर लोग 'ज़ीरो' कहने की बजाय 'शिव' उच्चारण करते रहे हैं। उदाहरण के तौर पर मोहन-जो-दड़ो (Mohan-Jo Daro) सभ्यता के प्रांत-सिन्ध में--भारत के विभाजन के दिन तक भी वहाँ के आदि सनातनी व्यापारी लोग हिसाब-किताब करते समय जब लिखित रक्मों को पढ़ते तो अन्य सभी अंकों को तो यथा-आधुनिक रीति से एक, दो, तीन, चार ·····इस प्रकार ही पढ़ते, परन्तु जहाँ ज़ीरों का अंक आ जाता, वहाँ बहुत लोग 'शिव'—ऐसा पढ़ते। अब यह तो इतिहासकारों ने भी घोषित कर ही दिया है कि मोहन-जो-दड़ो सभ्यता के लोग शिव के उपासक थे। अतः उस प्रान्त के लोगों में बिन्दु को 'शिव' उच्चारित करने की प्राचीन प्रथा के प्रचलन से स्पष्ट विदित होता है कि वे लोग भी परमात्मा शिव को बिन्दु रूप ही मानते थे।

* कठोपनिषद

* अंगुष्ठमात्रं अमलं दीप्यमानं समन्ततः शुद्ध दीप शिखाकरं पूर्ण मण्डितम् । इन्दुरेखा समाकारम् तारूपमथापि वा । नीवारशूक सदृशं बिस सूत्राभमेव वा।...(अ २६। १४२-१४३)
† शिवमहापुराण, विद्येश्वरी संहिता

गोधरा सेवा केन्द्र द्वारा काकणपुर गांव में आयोजित प्रदर्शनी में ब्र० कु० चन्द्रिका चित्रों की व्याख्या करते हुए।

सम्बलपुर में एकात्मा यज्ञ के उपलक्ष में हुए समारोह में ब्र० कु० पार्वती जी प्रवचन करते हुए ।

खलीकोट में उड़ीसा सरकार द्वारा ऋण मेला में लगाई आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन उड़ीसा के मुख्य मन्त्री भ्राता जानकी वल्लभ पटनायक जी द्वारा सम्पन्न हुआ। ब्र० कु० नीलम ईश्वरीय सन्देश देते हुए।

मुरादाबाद में गीता जयन्ति के अवसर पर आयोजित झांकी दृश्य।

जमखन्डी में १८ जनवरी के दिन शान्ति यात्रा का दृश्य

हुबली सेवा केन्द्र द्वारा अंतर-माध्यमिक शालावालों का निबंध स्पर्धा में विजेताओं को 'पिताश्री रोलिंग शील्ड, देते हुए भ्राता शिवप्पा जी।

जामनगर में गुजरात के मुख्यमन्त्री उद्योगिक प्रदर्शनी में लगाए योग प्रदर्शनी के स्टाल में भी पधारे। ब्र० कु० रेखा तथा सुषमा उनका स्वागत करते हुए।

जालन्धर सेवाकेन्द्र की ओर से गोराया में आयोजित प्रदर्श का उद्घाटन भ्राता जोगेन्द्र नाथ जोशी द्वारा किया जा रहा

भैरहवा में नेपाल नरेश के ३९ वें जन्मोत्सव पर जलूस में निकाली गई चैतन्य देवियों की झांकी की एक झलक

खंडवा सेवाकेन्द्र की ओर से ग्राम कैगांव माखन में प्रदर्शनी का उद्घाटन सरपंच करते हुए

रायसेन (म० प्र०) में हुई आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन जिला न्यायाधीश भ्राता आर० सी० जैन द्वारा किया जा रहा है।

शहडौल सेवा केन्द्र द्वारा 'बुढ़ार' में चरित्र निर्माण आध्यात्मि प्रदर्शनी में व्यवहार न्यायाधीश भ्राता डी० आर० सिधार को समझाते हुए ब्र० कु० सुशीला।

मेरें–ब्रह्मा बाबा के संस्मरण

(ब्र० कु०रमेश, गामदेवी, बम्बई)

इस ईश्वरीय जीवन में हम सदा स्व-उन्नति चाहते हैं। उन्नति अर्थ परमपिता परमात्मा ने हमें ज्ञान, योग, धारणा और सेवा रूपी चार मुख्य साधन दिए हैं और इन चारों साधनों द्वारा की गई साधना के आधार पर हम आगे बढ़ते जा रहे हैं।

एक बार मैंने बाबा को अपने पुरुषार्थ की रफ़्तार बढ़ाने की विधि के लिए पूछा। प्यारे बाबा ने कहा बच्चे इन चारों बातों को अपने लौकिक व्यवसाय में ऐसा प्रयोग में लाओ जो वह व्यवसाय भी ईश्वरीय सेवा का रूप बन जाए। व्यवसाय और योग का सम्मिश्रण होने से वह कर्म-योग बन जाएगा। व्यवसाय की ईश्वरीय सेवा के साथ संलग्न करेंगे तो व्यवसाय रूपी कर्म करते समय परमात्मा के साथ योग स्वतः लगेगा।

नई सृष्टि की स्थापना के कार्य में अनेक प्रकार के व्यवहार तथा व्यवसायों का ध्यान रखना पड़ता है। ज्ञानयोग की प्रचार व्यवस्था अर्थ उसी में तीन पैर पृथ्वी की जरुरत पड़ती है। तो उसी में मकान चाहिए। मकान बनाने के व्यवसाय को जानने वाले इसलिए मकान बनाने के कार्य में सहयोगी बन जाएं तो वह व्यवसाय उन्हें कर्मयोगी बनने में मददगार बन जाएगा। सीखने के लिए आए हुए बहन-भाइयों को शुद्ध तथा पवित्र भोजन चाहिए। इसी कारण भोजन पकाने की विधि का विधान अच्छी रीति जानने वालों के लिए यह कार्य ही आसानी से कर्मयोगी बन जाएगा। उनके द्वारा बना हुआ भोजन स्वयं परमात्मा स्वीकार करते हैं। परमात्मा के द्वारा डायरेक्ट स्वीकार किया जाना उन व्यवसायी व्यक्तियों के लिए बड़े से बड़ा उपहार है।

इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो हर व्यवसाय तथा व्यवहार को ईश्वरीय सेवा के साथ जोड़ा जा सकता है। साथ २ दूसरा दृष्टिकोण ये रखें कि सभी व्यवसाय वालों को परमात्मा का ज्ञान देकर उनके व्यवसाय में रही हुई खामियां दूर करके अर्थात् उस व्यवसाय का शुद्धिकरण करके उसे श्रेष्ठ तथा सर्वोत्तम माध्यम बनाएं।

दुनिया में लोग धन, व्यवहार आदि से दूर भागते हैं, परन्तु बाबा को तो नए विश्व में श्रेष्ठ जीवन व्यवहार की स्थापना करनी है। वह सृष्टि सर्व प्रकार के वैभव से सम्पन्न होगी। इसी कारण धन तथा व्यवहार दोनों को शुद्ध बनाने का पुरुषार्थ प्यारे बाबा हम बच्चों से कराते हैं। इसीलिए पवित्रता को जीवन में धारण करने वाले बच्चों का ही धन इस नई सृष्टि की स्थापना के कार्य में बाबा लगाते हैं। पवित्र विचार, पवित्र धन तथा पवित्र अन्न-इस त्रिमूर्त्ति द्वारा विश्व परिवर्तन का कार्य हो रहा है।

बाबा हमारा परमपिता, परम शिक्षक तथा परम सतगुरु भी है। माया परीक्षा लेती है तो बाबा भी परम शिक्षक के रूप में परीक्षा लेता है। वह देखता है कि बच्चे कहां तक पास होते हैं।

इसी प्रकार हमारी भी एक बार बाबा ने परीक्षा ली। बात सन् १९६१ के जून मास की है। हम सब मधुबन जाने का प्लान बना रहे थे। पत्र भी मधुबन भेजा तो उत्तर में बाबा ने लिखा कि बच्चे यहाँ आजकल गर्मी के कारण पानी की कमी है। इसलिए भल बाद में आना। हम सब तो इस बात को श्रीमत समझ कर शांति से बम्बई में बैठ गए। २-४ दिन बाद मधुबन से विश्व किशोर दादा आए। उन्होंने बताया कि बाबा तो हम सबका मधुबन में इन्तजार कर रहे हैं। हमने कहा कि बाबा ने तो पानी की कमी की बात लिखी है। तब उन्होंने बताया कि बाबा वहाँ यह बात सबको बताकर हंस रहे थे। कि देखो मैं बच्चों की परीक्षा लेता हूँ। देखें बच्चों में कितना निश्चय है। निश्चयबुद्धि बच्चे पानी की कमी के कारण रुकेंगे नहीं। दौड़ते चले आएंगे। और कहेंगे बाबा

हम तो आधी बाल्टी से स्नान कर लेंगे। बम्बई से ज्यादा कपड़े ले आएंगे और वहाँ मधुबन में कपड़े धोने में पानी को व्यय नहीं करेंगे।

इस तरह विश्वकिशोर दादा ने हमें समझाया कि बाबा के महावाक्य कभी श्रीमत के रूप में होते हैं तो कभी परमशिक्षक के रूप में परीक्षा लेने तथा निश्चय की परख करने हेतू भी होते हैं। यह भेद समझने के लिए सूक्ष्म बुद्धि तथा विवेक चाहिए। नहीं तो कभी 2 बच्चे परीक्षा की बात को श्रीमत तथा श्रीमत की बात को परीक्षा समझ लेते हैं। इसी कारण आगे नहीं बढ़ते हैं। जैसे मोटर कार में ब्रेक तथा स्पीड बढ़ाने अर्थ दोनों बातें होती हैं। कुशल ड्राइवर जानता है कि ब्रेक कहाँ लगाना है और स्पीड कहाँ बढ़ानी है। उसी तरह प्यारे बाबा के महावाक्यों में छुपे हुए गुप्त इशारों को महीनता-युक्त बुद्धि से कई बच्चे समझ जाते हैं।

बाद में हम सब मधुबन गए तो बाबा ने पानी की समस्या का एक अक्षर भी नहीं बोला। पानी तो अच्छी मात्रा में आ रहा था अर्थात् तब हमें अच्छी रीति से समझ में आया कि बाबा ने शुरु में हमारी परीक्षा अर्थ यह बात लिखी थी और तब से प्यारे बाबा के महावाक्यों का उसी महीनता में जाकर समझने का पुरुषार्थ करने लगे।

इस बात पर एक बार जानकी दादी से हमारी चर्चा हुई और हमने इस परीक्षा रूपी बाबा के पत्र की बात उन्हें कही। इस पर उन्होंने बताया कि हां, बाबा कई बार हम बच्चों की परीक्षा लेते हैं। एक बार उन्होंने भी कराची, हैदराबाद में बाबा को बताया कि जहाँ वह रहते थे उसी स्थान पर बहुत अच्छे २ बच्चों की फलवाड़ी निकली है।

उसी बात पर बाबा ने कहा-बच्ची तुम भोली हो। कोई बच्चा इतना निश्चय बुद्धि नहीं है और तुम मेहनत फालतू में करती हो। कल क्लास में सबको बता दो कि आपका ये लास्ट क्लास है। कल से क्लास बंद हो जाएगा। कोई बाबा की मुरली आदि सुनने न आवे।

जानकी दादी ने दूसरे दिन सबको ये बात सुनाई। सबको आश्चर्य हुआ। परन्तु क्या करें? दूसरे दिन सुबह में बाबा का फोन आया कि बच्ची कोई क्लास में मेरे पास आया है। तो दादी ने कहा-जी नहीं कैसे आएगा कोई। बाबा ने कहा बच्ची जाओ बाहर गेट तक देख कर आओ। जानकी दादी बाहर गई तो गेट के बाहर एक व्यक्ति बैठा था वह शांत चित्त इंतजार में था। दादी ने उससे पूछा कि आप क्यों आए हो तो वह बोला-"कि कुछ भी हो जाए मैं तो बाबा से अपना मुरली रूपी अधिकार जरूर लूंगा। अंदर आने की बाबा ने मना की है, परन्तु यहां बैठने की तो मना नहीं है। मैं यहां बैठकर शिव बाबा को याद कर रहा हूँ।

दादी ने अंदर आकर बाबा को फोन में ये समाचार सुनाया। तब बाबा ने कहा देखा केवल एक ने ही बाबा को पहचाना है। बाकी सब तो घर में बैठ गए। बाकी सब फेल हो गए। अभिप्रायः यह है कि बाबा द्वारा ली गई परीक्षा को समझना तथा उसमें पास होने का विशेष सूक्ष्म पुरुषार्थ होना चाहिए तो आगे बढ़ने में सफलता मिलेगी।

विश्व को शान्ति की किरणें प्रदान करने करने वाला · ···

(पृष्ठ २४ का शेष)

शिव बाबा की आशाओं को भी पूर्ण रूप से फालो करना है। जैसा बाप वैसे ही बच्चे···

(२) **शाँति के अवतार बनो**—हमारे जीवन में शान्ति इतनी गहराई से समा जाए कि हम मनुष्यों को शान्ति के अवतार नजर आए। कोई भी परिस्थितियाँ तथा समस्याएँ हमारी शान्ति को भंग न करें। हमारे जीवन से, हमारे हर बोल से, हमारे हर कर्म से, हमारी नजरों से, हमारे चेहरे से भी सभी को शान्ति मिले और परम शान्ति का सन्देश मिलता रहे।

जब भी हम शान्ति स्तम्भ पर खड़े होते हैं तो कानों में धीरे से आवाज़ गूंजती है—

बनकर ब्रह्मा समान चेतन शान्ति स्तम्भ।
मिटाओ सर्व आत्माओं के मन के गम॥
समय कम है, न करो इसमें विलम्ब।
बन जाओगे सतयुग में देवता श्रेष्ठतम॥

विश्व को शान्ति की किरणें प्रदान करने वाला शान्ति-स्तम्भ

ब्र०कु० आत्मप्रकाश, आबू

अरावली पर्वत पर प्राकृतिक सौन्दर्य से सम्पन्न मन-मोहक तथा सुन्दर पहाड़ियों के बीच श्वेत वेशधारी मधुबन में अनोखा शान्ति-स्तम्भ स्थिति है। यह प्रजापिता ब्रह्मा के सम्पूर्ण स्थिति का यादगार है जहां शिव परमात्मा के साकार माध्यम, ब्रह्मा के पार्थिव शरीर का अग्नि संस्कार किया गया था। आज भी इस पावन स्थल पर हजारों आत्माएं शान्ति के सागर से शान्ति की अंचली पाकर अपनी प्यास बुझा रही हैं। यहां अनेक आत्माओं को दिव्य अनुभूतियाँ तथा साक्षात्कार होते हैं। यह अद्भुत शान्ति स्तम्भ चुंबक की तरह विश्व की आत्माओं को आकर्षित करता है।

स्तम्भ—स्तम्भ की स्थिरता और आधार देना ये दो विशेषताएं होती हैं। यह शान्ति स्तम्भ ब्रह्मा वत्सों को योग की उच्चतम एकरस तथा अचल स्थिति बनाने की प्रेरणा प्रदान करता है और सारे विश्व की आत्माओं को शान्ति दिलाने का आधार है।

शांति-स्तम्भ—इस शान्ति स्तम्भ में पवित्रता स्तम्भ, ज्ञान स्तम्भ, एवं शक्ति-स्तम्भ अन्तर्निहित है। जब आत्माएँ पवित्रता, ज्ञान और शक्ति के अखुट खज़ानों से भरपूर होते हैं तो परमशान्ति की अनुभूति होती है, फलस्वरूप हम शान्ति के स्तम्भ बनते हैं। इस टावर (tower) के ये चार स्तम्भ ब्रह्मा के जीवन की झलकियाँ प्रस्तुत करते हैं। उनके जीवन में शान्ति, शक्ति, पवित्रता व ज्ञान स्तम्भ की तरह ठोस थे। और यही कारण है कि वे हम सबसे पहले सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त कर सके। शान्ति के स्तम्भ बनने के लिए शिव बाबा ने ब्रह्मा-मुख द्वारा अन्तिम समय निम्न विशेष ३ मधुर शिक्षाएँ बताई थीं जो हमें कदम कदम पर मदद करती हैं।

(१) **दिव्य गुण धारण करना**—बच्चे, तुम्हें आसुरी संस्कारों को त्याग कर दैवी संस्कार अपनाने के लिए दिव्य गुण धारण करना है क्योंकि तुम्हें देवता बनना है। ताकि तुम्हारे गुणों की खुशबू, विश्व में फैली दुर्गुणों की दुर्गन्ध को दूर करें और विश्व खुशबुदार स्वर्ग बन जाए।

(२) **याद की यात्रा पर रहना**—मीठे बच्चे, निरन्तर मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के किए हुए पापकर्म दग्ध होकर तुम मेरे समान सम्पूर्ण बन जाएँगे। मेरी याद से ही तुम्हारे व सम्पूर्ण विश्व के दुख दूर होंगे जिससे तुम मास्टर सुख के सागर बन जाओगे। और इसी याद की यात्रा पर रहने से ही तुम अपनी मंजिल पर पहुंच जाएंगे।

(३) **पवित्र बनना और बनाना**—बच्चे, सम्पूर्ण पवित्र बनकर सभी को पवित्र बनने का सन्देश दो पवित्रता ही महानता है। यही तुम्हारे जीवन की शान तथा सर्वसुखों की जननी है। अतः बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए पवित्रता का झण्डा लहराओ।

"पवित्रता स्तम्भ"—वास्तव में पवित्रता ही हम आत्माओं का सर्वोत्तम श्रृंगार है इसलिए पवित्रता के सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त करना अनिवार्य है। पवित्रता का कांटा (needle) इतना नाजुक (sensetive) है जोकि थोड़ी अपवित्रता को सहन नहीं करता। इसका एक स्पष्ट उदाहरण यह है कि एक बार ब्रह्मा बाबा कराची में संध्या के समय ध्यान-अवस्था में बैठे थे। तब उन्होंने साक्षात्कार में देखा कि मैं विमान में बैठकर आकाश में उड़ रहा हूं। अचानक बाबा को एक संकल्प आया कि यहाँ तो मैं अकेला ही बैठा हूं, यशोधा (बाबा की धर्मपत्नी) कहाँ है, क्योंकि यशोधा सदा ब्रह्मा बाबा के साथ साथ रहती थी। तो यह संकल्प आते ही यह अनुभव हुआ कि विमान जोर से जमीन पर गिरा और बड़ी भारी दुर्घटना हुई। बाबा सोचने लगे ऐसा क्यों हुआ, जरूर ये शिव बाबा की याद के बजाय मेरे देह के सम्बन्धी को याद करने से हुआ। ऐसी अवस्था से ब्रह्मा ने आत्मिक स्थिति के

अभ्यास से सम्पूर्ण पवित्रता को अपनाया अर्थात पवित्रता के स्तम्भ बने। इसी संदर्भ में बाबा ने मधुर मधुर शिक्षाएँ दी थीं।

(१) **मन बचन कर्म से दुःख न दो**—मीठे बच्चे, सुख के सागर के तुम बच्चे हो, तुम्हें किसी को दुःख नहीं देना है। दुख देने वाला कभी सुखी नहीं हो सकता। यदि तुम भगवान के बच्चे होकर भी दुख देते रहोगे तो कोई तुम्हें ईश्वरीय सन्तान कैसे मानेगा। दुख तो काँटे देते हैं, तुम्हें तो सुख देने वाले फूल बनकर फूलों का बगीचा स्वर्ग में जाने लायक बनना है।

(२) **बेहद के बाप और वर्से को याद करो**—बच्चे, सदा शिव बाबा को याद करते रहो तो बाप समान सर्व गुणों के तथा शक्तियों के सागर बन जाओगे और वर्से को याद करेंगे तो तुम्हारा मन खुशी में झूमता रहेगा और दुःख तुम्हारे चरणों को छू नहीं सकेगा।

"**ज्ञान-स्तम्भ**"—ज्ञान सागर शिव परमात्मा जब ब्रह्मा वत्सों को ब्रह्मा मुख से ज्ञानामृत पिलाते थे तो सर्वप्रथम ब्रह्मा को चखने को मिलता था। ब्रह्मा बाबा हर एक ज्ञान की पाइन्ट के गहराई में जाकर उसमें जो सूक्ष्म राज छिपे रहते थे, उन्हें बच्चों के सामने रखते थे। और उस ज्ञान को अपने जीवन में धारण कर फिर बच्चों से कराते थे। बाबा को जब भी देखते तो ऐसा अनुभव होता था कि सदा बाबा ज्ञान की लहरों में लहरा रहे हैं। इसलिए बाबा के हर बोल से ज्ञान रत्न ही टपकते थे। इस पुरुषार्थ से ब्रह्मा भी शिव बाबा के समान ज्ञान सागर अर्थात् ज्ञान स्तम्भ बन गए। ज्ञान स्तम्भ बनने के लिए बाबा ने निम्न शिक्षाएँ दी थीं।

(1) **समय कम है गफलत मत करो**—बाबा ने आकर हमें सत्य ज्ञान दिया। बाबा बार-बार समय पर ध्यान खिचवाकर पुरुषार्थ की गति को तेज कराते थे। बाबा कहते थे कि बच्चे, अन्तिम समय को जान-कर यदि कोई मनुष्य गफलत की नींद में सोया रहे उसे क्या कहेंगे। इसलिए अभी अन्तिम समय में सम्पूर्ण बनने के लिए पूर्णरूपेण मेहनत करो।

(2) **अविनाशी ज्ञान धन दान करो**—बच्चे, ज्ञान दान ही श्रेष्ठ दान है। ज्ञान दान देने से ज्ञान धन खुटता नहीं है बल्कि निरन्तर बढ़ता ही रहता है। ज्ञान दान देना बड़ा भारी पुण्य है। ज्ञान-नेत्र देने वाला मनुष्य सभी का शुभ आशीर्वाद प्राप्त करता है और फलस्वरूप उसका जीवन भी आनन्दित हो उठता है।

"**शक्ति स्तम्भ**"—ब्रह्मा बाबा का जीवन शक्ति-स्वरूप था। उन्होंने सर्वशक्तिवान से शक्तियाँ प्राप्त करके स्वयं को महावीर बनाया था। यही कारण है कि वे कभी विघ्नों से नहीं घबराये। यह स्तम्भ हमें भी बाप समान शक्ति सम्पन्न बनने की प्रेरणा देता है कि सर्व शक्तिवान के बच्चे हम भी शक्ति स्वरूप हैं। इसके संदर्भ में बाबा की दी हुई मधुर मधुर शिक्षाएँ—

(१) **निश्चय में ही विजय है**—हमें शिव बाबा पर पूर्ण निश्चय होना चाहिए। निश्चय में ही हर कदम पर विजय प्राप्त होगी। निश्चय की कमी से विजय कठिन लगेगी। क्योंकि निश्चय से ही ईश्वरीय नशा चढ़ता है जिससे हर कार्य में सहज ही सफलता मिलती है।

(२) **ज्ञान स्वरूप, प्रेम स्वरूप, शक्ति स्वरूप बनो**—ज्ञान सागर के बच्चे होने के नाते हमें ज्ञान स्वरूप होकर रहना है, प्रेम के सागर भगवान के बच्चे होने के नाते हमें प्रेमस्वरूप बनकर रहना है।

(३) **श्रीमत पर चलो तो श्रेष्ठ बनेंगे**—"मीठे बच्चे, मनुष्यों की मत पर तो तुम जन्म जन्म चलते आये। और नीचे गिरते आये। परन्तु अब चढ़ती कला के लिए मेरी श्रीमत पर चलो तो श्रेष्ठ बनते जाओगे तुम्हारा कभी भी अकल्याण नहीं होगा।"

शान्ति स्तम्भ का सन्देश—

विश्व को शान्ति का सन्देश देता हुआ यह स्तम्भ हमें याद दिलाता है कि हम शान्ति के सागर के बच्चे आत्माएं शान्ति स्वरूप हैं।

(१) **बाप का अनुकरण करो**—हम सभी को सम्पूर्ण स्थिति की ओर बढ़ने के लिए प्रजापिता ब्रह्मा बाप के हर कदम को फ़ालो करना है। यही निशानी है ब्रह्मा बाप से स्नेह की। क्योंकि जिससे स्नेह होता है उसका ही हम अनुकरण करते हैं। और साथ-साथ

(शेष पृष्ठ २२ पर)

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० सत्यनारायण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित

दिल्ली—भारत की राजधानी दिल्ली में "सद्भावना संस्था" द्वारा आयोजित एक धार्मिक सारम्भ में देश की विशेष सेवाओं के निमित्त बनी हुई ६ धार्मिक संस्थाओं को भारत के राष्ट्रपति भ्राता ज्ञानी जैलसिंह जी ने मानपत्र देकर सम्मानित किया। उन ६ धार्मिक संस्थाओं में से ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का नाम भी उल्लेखनीय है। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की विशेष प्रतिनिधि ब्रह्माकुमारी आशा बहन ने भरी सभा में राष्ट्रपति जी द्वारा सद्भावना रत्न का मानपत्र प्राप्त किया तथा राष्ट्रपति जी ने ब्रह्माकुमारी आशा बहन को शाल पहनाकर सम्मानित किया। ये कार्यक्रम दूरदर्शन में भी प्रसारित किया गया।

मद्रास—प्राप्त समाचार के अनुसार मद्रास में "विश्व शान्ति महोत्सव" का आयोजन एक विशाल रूप से किया गया। यह महोत्सव विशेष कर दो भागों में बांटा गया। सर्वप्रथम एक विशाल मेला के रूप में आयोजित किया। यह अद्भुत मेला २२ ता० से ८ ता० तक चलता रहा। यह मेला मद्रास के प्रसिद्ध मैदान एम० यू० सी० ग्राउन्ड में रखा गया। मेले का उद्घाटन मद्रास उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता के० बी० एन० सिंह तथा दादी निर्मल शान्ता जी एवं दादी चन्द्रमणि जी ने दीप प्रज्जवलित करके किया। यह मेला दूर से ऐसा लग रहा था जैसे एक विश्व-शान्ति ग्राम बसाया गया हो। उस आकर्षित करने वाले गांव के बीच आबू पर्वत के "ओम शान्ति भवन" का प्रतिरूप विशाल मण्डप बहुत ही सुन्दर रोशनी में जगमगा रहा था। २१ ता० को प्रेस कान्फ्रेन्स का आयोजन किया गया। प्रेस कान्फ्रेन्स में न्यूज एजेन्सी, रेडियो तथा प्रमुख अंग्रेजी एवं स्थानीय भाषाओं के सभी पत्रिकाओं के लगभग २२ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मद्रास के करीब १४ अखबारों में विशेष समाचार तथा फोटो छपे। रेडियो तथा दूरदर्शन द्वारा भी समाचार प्रसारण हुआ।

मेले के शुभ अवसर पर राजयोग शिविर का भी सभी भाषाओं में प्रबन्ध किया गया था। लगभग १,००,००० लोगों ने मेला देखा, ७०० लोगों ने योग शिविर किया। १५० [illegible]ाई-बहन क्लास में सम्मिलित हुए।

दूसरी तरफ ४ दिन के लिए एक विशाल कान्फ्रेन्स का भी आयोजन किया गया। यह एक प्रसिद्ध स्थान वैलूवोर कोटम में रखा गया। एक विशाल भव्य शोभा यात्रा के साथ लगभग ३००० प्रतिनिधियों के साथ प्रारम्भ हुई। कान्फ्रेन्स के उद्घाटन के लिए मुख्य प्रशासिक दादी प्रकाशमणि जी, माउन्ट आबू से पधारी थीं। भारत के भूतपूर्व उपराष्ट्रपति भ्राता बी० डी० जत्ती जी भी इस अवसर पधारे थे।

नागपुर—१८ जनवरी, १९८४, अव्यक्तस्मृति दिवस, तथा विश्व शान्ति दिवस पर भ्राता पी० वी० नरसिंह राव (विदेश मन्त्री) जी का नागपुर सेवा केन्द्र पर आगमन हुआ। और उन्हों के विचार निम्नलिखित हैं "प्रजापिता ब्र० कु० ईश्वरीय विश्व विद्यालय एक महान संस्था है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का अनोखा तथा गौरव प्रद कार्य है। यह संस्था संयुक्त राष्ट्रसंघ की गैर सरकारी तौर पर सभासद है। और इसे सलाहकार का दर्जा प्राप्त है। यह बहुत ही सराहानीय बात है।

यह बड़ी लग्न के साथ कार्य कर रही है। मुझे इस विश्व-विद्यालय के कार्य से बहुत प्रसन्नता है। आज का दिन विश्व शान्ति के लिए बहुत महत्वपूर्ण दिवस है। आज के अस्त्र-शस्त्र की होड़ देखकर कोई कह नहीं सकता कि कल क्या होगा। आपने कहा कि एक तरफ हथियारों को बढ़ाना दूसरी तरफ शान्ति की बात करना इससे कोई लाभ नहीं। विश्व में शान्ति पाने के लिए कोई ऐसी दूकान नहीं जहां से शान्ति खरीद सकें और कोई झाड़ का फल नहीं जो तोड़ सकें। शान्ति के लिए तीन मोर्चे जरूरी हैं। एक तो हरेक व्यक्ति के दिमाग में शान्ति के लिए विचार, दूसरा जनता और समाज की दृष्टी में शान्ति और तीसरा सरकार के अधिकारियों में विश्व शान्ति के लिए सच्ची दिलचस्पी हो। तभी तीनों मिलकर शान्ति ला सकेंगे। इसमें प्रजापिता ब्र० कु० ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का बहुत बड़ा भाग है। आपने कहा कि भारत शान्ति प्रिय देश रहा है। भारत ने कभी भी किसी पर आक्रमण नहीं किया। भारत की नीति शान्ति प्रिय रही है। भारत पर आक्रमण हुए फिर भी भारत ने सबको समा लिया।

शान्ति को रचनात्मक तरीके से स्थापन करना होगा। व्यक्तिगत शान्ति से ही विश्व में शान्ति होगी। विश्व शान्ति के लिए हम सब जुटे रहेंगे तो यह गम्भीर समस्या हल होगी। आपने कहा कि इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आने का मुझे सौभाग्य मिला मुझे बहुत खुशी हुई।"

बंगलोर—समाचार मिला है कि बंगलोर में एक विशेष सेमीनार का आयोजन किया गया। यह सेमीनार टाउन हाल में एक भव्य समारोह के साथ प्रारम्भ हुआ। सेमीनार का विषय "राजयोग तथा विज्ञान" का समन्वय। इस विषय पर अनेक प्रतिनिधियों ने अपने विचार प्रगट किये। इससे अनेक आत्माओं को विशेष लाभ हुआ।

बंगलोर में एक विशेष स्थान पर विश्वशान्ति राजयोग भवन का उद्घाटन दादी प्रकाशमणि जी के हस्त कमल द्वारा सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में ३००० ब्राह्मण परिवार का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

झांसी—झांसी के प्रमुख महाविद्यालय वी० वी० सी० में १०० अध्यापकगण व विद्यार्थियों के बीच में ब्र० कु० पंचमसिंह के प्रवचन हुए। प्राचार्य महोदय ने विशेष रुचि प्रगट की और कहा ऐसे कार्यक्रम समय-समय पर यहां आप लोग रखिये। इसके अलावा पत्रकारों के बीच में, रेलवे प्रबन्धक कार्यालय के प्रांगण में, तथा बाजार के बीच में विशेष कार्यक्रम तथा प्रवचन हुए। स्मृति दिवस पर भी ईश्वरीय सेवा किया गया।

अमृतसर—१८ जनवरी 'स्मृति दिवस' के उपलक्ष में एक सार्वजनिक कार्यक्रम सेवाकेन्द्र पर ही आयोजित किया गया। सुन्दर कार्डस छपा करके प्रतिष्ठित बड़ी कम्पनियों को बांटा गया। करीब १५० विशेष आत्माओं ने पधार कर लाभ प्राप्त किया। व्यापारी वर्ग, शिक्षक वर्ग के लोगों ने विशेष लाभ प्राप्त किया। सभी आत्माओं को साहित्य व प्रसाद भी वितरित किया गया।

गोधरा—सेवा केन्द्र की ओर से गोधरा पुलिस हेड क्वार्टर्स और जहुरपुरा गुजराती शाला के विस्तार में मानव-उत्थान आध्यात्मिक प्रदर्शनी और सेवा केन्द्र पर एक स्नेह-मिलन के कार्यक्रम में लगभग ३५०० मनुष्यात्माओं ने ईश्वरीय सन्देश प्राप्त किया। इसके अलावा गोधरा के समीप कांकणपुर गांव में प्रदर्शनी लगाई गयी। ग्राम पंचायत के युवा-सरपंच भ्राता बसंत भाई ने भी प्रदर्शनी देखी और इसकी बड़ी प्रसंशा की।

शिवसागर—शिवसागर जिला जेल में एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी व प्रवचन का कार्यक्रम कैदियों के बीच में रखा गया। शिव बाबा की परिचय दिया गया तथा कैदियों से अवगुणों को छोड़ने के लिए दृढ़ संकल्प कराया गया। जेल सुपरिटेन्डेन्ट, जेलर एवं अतिरिक्त कर्मचारियों ने भी काफी सहयोग दिया। और बुराइयों को छोड़ने का संकल्प किया।

भैरहवा (नेपाल)—नेपाल नरेश श्री ५ महाराजधिराज वीरेन्द्र वीर विक्रम शाह देव के ३९ वें शुभ जन्मोत्सव पर भव्य जलूस में झांकी सहित सम्मिलित होने के लिए कार्यक्रम समिति द्वारा ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को भी निमन्त्रण मिला।

इस दिन जलूस में भाग लेने वाली झांकियों की प्रतियोगिता भी रखी जाती है। भैरहवा सेवा केन्द्र की ओर से ल० ना० राधे कृष्ण व गोप गोपिकाओं की चैतन्य झांकी अन्य शहर से निकलने वाली १०-१२ झांकियों के साथ पूरे नगर में परिक्रमा की। अपनी विश्व विद्यालय की सुन्दर झांकी अन्य झांकियों से विशेष आकर्षक थी। अपनी झांकी को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

चित्रकूट धाम—ब्र०कु० रेशमा लिखती हैं कि सतना सेवाकेन्द्र के उपसेवा केन्द्र मानिकपुर की तरफ से भारत भूमि की सुप्रसिद्ध तपोभूमि 'चित्रकूट' के पावन धाम में त्रिदिवसीय, विश्व नव निर्माण, आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें हजारों आत्माओं ने निराकार राम का परिचय प्राप्त किया तथा वहां रोजाना ही क्लास, तथा सेवाकेन्द्र स्थापित कर दिया है।

रतलाम—समाचार मिला है कि श्री गीता-रामायण प्रचार समिति जावरा के द्वारा नगर में प्रवचन करने तथा प्रदर्शनी लगाने हेतु हार्दिक निमंत्रण मिला। राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन माननीय भ्राता भारतसिंह जी राज्य के गृह एवं परिवहन मंत्री जी ने दीप प्रज्जवलित करके के किया।

भावनगर—गीता बहन लिखती हैं जैनों के प्रसिद्ध तीर्थस्थान पालीताना में एक विशाल 'विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के लिए मेजिस्ट्रेट राजपाल साहब पधारे थे। राजयोग शिविर का भी आयोजन किया गया जिसमें लगभग २०० आत्माओं ने योग शिविर से लाभ प्राप्त किया। सुन्दर चैतन्य झाँकी भी निकाली गयी। शिविरार्थियों के आग्रह पर गीता पाठशाला भी खोली गई है।

भुवनेश्वर—भुवनेश्वर सेवा केन्द्र की ओर से पुरी जिले के वनमालीपुर गाँव में आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग

शिविर का आयोजन किया गया। शान्ति शोभा यात्रा भी निकाली गयी। उड़ीसा के जंगल, मत्स्य तथा पशुपालन विभाग मंत्री भ्राता कुंआरिया माझी तथा काला हांडी जिला के विधायक भ्राता तेजरानी माझी ने भुनेश्वर सेवा केन्द्र का दौरा किया। सेवा केन्द्र की संचालिका राज-योगिनी ब्र० कु० संदेशी जी ने विश्व विद्यालय द्वारा किये जा रहे महान कार्य से अवगत कराया तथा ईश्वरीय साहित्य व लक्ष्मी नारायण का चित्र भेंट किया।

दिल्ली अशोक विहार—समाचार मिला है कि पिछले लगा-तार दो मास से कुछ गाँवों की सेवा की गयी। गाँव होलम्बी कलां, होलम्बी खुर्द तथा खेड़ा खुर्द में प्रदर्शनी, योग शिविर, भाषण तथा सत्संग के कार्यक्रम किए गये जिससे अनेक आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश मिला।

मुरादाबाद—समाचार मिला है कि मुरादाबाद में गीता समारोह बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर ब्र० कु० बहन भाइयों को सम्मिलित होने के लिए निमन्त्रण मिला। ब्र० कु० बहनों ने विशाल शोभायात्रा में भाग लिया तथा सुन्दर झांकी भी प्रदर्शित की। ईश्वरीय निमन्त्रण देने के लिए पर्चे छपा कर जनता में बांटे गए।

मोदीनगर—ब्र० कु० विनोद जी लिखती हैं कि अव्यक्त दिवस के अवसर पर ईश्वरीय सेवा अर्थ एक सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया था। शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति,पत्रकार, व्यापारी, डाक्टर सभी वर्ग के लोग पधारे थे। इसके अति-रिक्त ५६ गांवों के प्रधानों के बीच गायत्री बहन ने अपने मार्मिक अनुभव व्यक्त किए। इससे उनके जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

जालन्धर—ब्र०कु०कृष्णा लिखती हैं कि जन-जन को सन्देश देने हेतु १८ जनवरी स्मृति दिवस पर बाबा को प्रत्यक्ष करने के लिए भिन्न-भिन्न अखबारों में संदेश दिया गया। जैसे पंजाब केसरी हिन्दी, डेली मिलाप उर्दू, डेली हिन्द समाचार, उर्दू, और जनवाणी पंजाबी, रोजाना अजीत पंजाबी, मिलाप अखबार हिन्दी तथा अन्य अखबारों में बाबा का फोटो व समाचार छपा। जिसको पढ़कर कई भाई-बहन आश्रम पर ज्ञान समझने के लिए आ रहे हैं।

बरनाला—ब्र० कु० वृज लिखती हैं कि 'स्मृति दिवस' १८ जनवरी पर बाप-दादा को प्रत्यक्ष करने के लिए जन-जन को ईश्वरीय सन्देश दिया गया। विशेषकर व्यापारी वर्ग की सेवा की गयी, जिन्होंने आश्रम पर पधार कर शान्ति और आत्मशक्ति का विशेष अनुभव प्राप्त किया और कहा कि ऐसी शान्ति और शक्ति की आज मानव को विशेष आवश्यकता है।

बड़ौदा—बड़ौदा से दैवी बहनराज जी ने समाचार भेजा है, आपने लिखा है कि बड़ौदा के नजदीक ताजपुरा गांव में विश्व-नव निर्माण प्रदर्शनी, राजयोग शिविर और ज्ञान-शिविर का कार्यक्रम हुआ। लगभग २००० आत्माओं ने ईश्वरीय सन्देश पाया ६० ने योग शिविर किया। स्नेह-मिलन पर २० भाई-बहन पधारे थे।

जामनगर— में एक लघु-उद्योग मेले का आयोजन किया गया इस मेले में ब्र० कु० ई० वि०वि० को भी आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाने हेतु दो स्टाल दिये गये थे। इसका उद्घाटन गुजरात के मुख्य मंत्री भ्राता माधव सिंह जी द्वारा हुआ। इस मेले को करीब १ लाख लोगों ने देखा। मेले के साथ-साथ आध्यात्मिक प्रदर्शनी भी देखी तथा शिव बाबा का सन्देश प्राप्त किया।

अमरावती—(महाराष्ट्र) सेवा केंद्र की ओर से अमरावती शहर के भव्य नेहरू मैदान में ता० १० दिसम्बर से २० दिसम्बर तक विश्व शान्ति आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन बहन उषाताई चौधरी (एम० पी०) ने दीप जलाकर किया। दादी चंद्रमणी जी ने ध्वजारोहरण किया। मेले में निमंत्रित मेहमान महाराष्ट्र के राजमंत्री भ्राता शेरेकर जी तथा भ्राता सुरेन्द्र भुयार वनमंत्री, के० जी० देशमुख व्ही० सी० उपस्थित थे।

पहले दिन शहर के मुख्य-मुख्य स्थानों से शोभा यात्रा निकाली गयी। पहले से ही सेवाकेंद्र पर प्रेस कॉन्फ्रेन्स रखी थी जिसका संचालन माउन्ट अबूसे पधारी हुई दादी मनोहर इंद्राजी ने किया। आकाशवाणी देहली तथा नागपुर से भी समाचार प्रसारित किया गया। मेला देखने के लिये दूर-दूर से लोग पहुंच चुके थे। लगभग २ लाख से ऊपर आत्माओं ने मेला देखा।

गोवा -प्राप्त समाचार के अनुसार १ जनवरी को भारत के राष्ट्रपति भ्राता जैलसिंह जी के गोवा पहुंचने पर ब्रह्मा-कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के भाई बहिनों ने उन्हें नव वर्ष की शुभ बधाई देते हुए मुबारक दी। लगभग १५ मिनट तक ज्ञान चर्चा के साथ-साथ उन्होंने गोवा में हो रही ईश्वरीय सेवाओं की विशेष जानकारी प्राप्त की। पीस कान्फ्रेन्स का फोल्डर तथा 'विद्यालय का फोटो' भेंट किया गया। उस समय गोवा के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भी ईश्वरीय सन्देश देते हुए साहित्य दिया गया। इसके

अतिरिक्त गोवा में ब्रह्माकरमली गांव से ब्रह्मोत्सव के समय ब्रह्मा के मन्दिर में प्रवचन तथा प्रोजेक्टर शो के कार्यक्रम हुए। तथा दत्त जयन्ती पर दत्त मन्दिर में भी प्रवचन चला। गोवा की सेन्ट्रल जेल में एक जनवरी को विशेष प्रवचन हुआ।

जूनागढ़—समाचार मिला है कि जूनागढ़ शहर के शमशान में एक मुक्ति जीवनमुक्ति पथ प्रदर्शक संग्रहालय का निर्माण किया गया है। शमशान के पास ही वहां देव-दिवाली पर बहुत बड़ा मेला लगता है, उन दिनों लगभग ५००० आत्माओं ने संग्रहालय को देखा तथा ईश्वरीय सन्देश प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त 'श्रद्धा सार्वजनिक डिस्पेन्सरी' के उद्घाटन फंक्शन में 'योग द्वारा स्वास्थ्य' नामक विषय पर प्रवचन करने के पश्चात सभी को योगाभ्यास भी कराया गया।

मेहसाना—प्राप्त समाचार के अनुसार कांग्रेस 'आई' के महासचिव भ्राता राजीव गांधी के मेहसाना पहुंचने पर ब्रह्माकुमारी बहनों ने चंदन का तिलक लगाकर पुष्पों से स्वागत किया तथा आबू में होने वाली कानफ्रेन्स का निमन्त्रण, पीस चार्टर, शिवबाबा का चित्र तथा ईश्वरीय साहित्य भेंट किया। उनके साथ गुजरात के मुख्य मंत्री, स्वास्थ्य मंत्री आदि-आदि कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भी निमन्त्रण के साथ पीस चार्टर दिया गया।

सम्बलपुर—सेवाकेन्द्र की ओर से प्राप्त समाचार के अनुसार शहर में आयोजित सर्व धर्मावलम्बियों की ओर से 'एकात्मता यज्ञ' में ब्रह्माकुमारी बहनों को भी एक स्टाल मिला जिसमें आध्यात्मिक किताबों को जनसाधारण के सम्मुख प्रदर्शनी के रूप में प्रस्तुत किया गया।

थाना—समाचार मिला है कि सेवाकेंद्र के त्रिवार्षिक महोत्सव के उपलक्ष में एक 'स्नेह संवर्धन समारोह' का भव्य आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम दिव्य प्रवचन 'आत्मिय स्नेह द्वारा एकात्मता' तथा गीत, नृत्य एवं आध्यात्मिक नाटक द्वारा मनाया गया।

गोंदिया—गोंदिया शहर के सुप्रसिद्ध हाल अग्रसेन भवन में विश्व शान्ति दिवस समारोह मनाया गया। जिसके अध्यक्ष एल० पी० भोजवानी वाइस प्रेसीडेन्ट आफ इन्टर नेशनल सिन्धी सोसायटी और मुख्य अतिथी भ्राता नन्दकिशोर जी मुन्दड़ा अध्यक्ष व्यापारी एसोसियेशन भन्डारा पधारे थे लगभग ३०० आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया गया। अनेक आत्माओं को विशेष लाभ मिला।

मिरजापुर—सेवा केन्द्र द्वारा चुनार में गीता ज्ञान योग आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचन का कार्यक्रम सुप्रसिद्ध रामलीला मैदान कमेटी हाल में रखा गया। जिसे चुनार की तथा आस-पास गांव की लगभग ५००० आत्माओं ने देखा और लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त 'स्मृति दिवस' का कार्यक्रम दुर्गाप्रसाद अतिथी भवन में रखा गया था। उपस्थित जनता ने बड़े ध्यान से कार्यक्रम को देखा और लाभ उठाया।

कानपुर-नया गंज की तरफ से संक्रान्ति के ऊपर गांव वालों की विशेष सेवा की गयी। बहुआ इन्टर कालेज में प्रदर्शनी लगाई गयी जिसका उद्घाटन वहां के प्रधानाचार्य विजय बहादुर सिंह जी के हाथों द्वारा सम्पन्न हुआ। यह प्रदर्शनी लगभग १८०० छात्र छात्राओं, ४२ शिक्षकों को ज्ञान अर्जन करने में विशेष सहयोग मिला। लोकल पत्रकारों ने भी प्रदर्शनी देखी और वादा किया कि इसकी चर्चा हम अखबारों में भी देंगे। गांव शाह के ग्रामीण संक्रान्ति मेले में प्रदर्शनी लगाकर ग्रामीण जनता को ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

दुर्ग—ब्र०कु० रेखा लिखती हैं कि दुर्ग (म० प्र०) सेवा केन्द्र की ओर से स्थानीय महात्मा गांधी उच्चतर माध्यमिक शाला में सात दिन की विश्व-नव निर्माण आध्यात्मिक-प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन दुर्ग नगर निगम महापौर भ्राता आलम दास जी गायकवड़ के द्वारा हुआ। उन्होंने आध्यात्मिक चित्रों का अवलोकन किया। अपने विचार संस्था के प्रतिलिखित रूप में व्यक्त किए जो अति प्रशंसनीय है।

हुबली—समाचार मिला है कि कन्नड़ सिनेमा रंग के सुप्रसिद्ध डायरेक्टर पुछन्ना कनगाल जी हुबली के ईश्वरीय विश्व विद्यालय में पधारे थे। 'इन्द्रा क्लास हाउस' में आयोजन किए गये विश्व शान्ति दिन के सम्मेलन में भी आपने भाग लिया। आपने अपने भाषण में कहा कि सिनेमा माध्यम द्वारा हम जनता को रोशनी भी दे सकते हैं आग भी डाल सकते हैं आज मनुष्य का सुसंस्कृति, नैतिकता से नीचे गिर कर जो पतित जीवन बिता रहे हैं, उनको श्रेष्ठ जीवन जीने की प्रेरणा देने की जिम्मेवारी सिनेमा माध्यम पर है।

गोहाटी-आसाम की राजधानी गोहाटी से बाबा की चैतन्य फुलवाड़ी ने समाचार भेजा है स्मृति दिवस आप लोगों ने बड़े उत्साह पूर्वक बाप-दादा को प्रत्यक्ष करने हेतु मनाया। गौरी सदन हाल में जनता के लिए विशेश आध्यात्मिक

कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि माननीय मुख्य न्यायाधीश भ्राता टी० एस० मिश्रा और न्यायाधीश भ्राता के० एम० लाहरी जी ने पर्दा खोलकर बाबा के चित्र का अनावरण किया तथा पुष्प माला चढ़ाई। आयी हुई जनता को बाबा की जीवनी पर प्रकाश डाला गया।

लखनऊ-हजरतगंज से सेवा समाचार मिला है कि १८ जनवरी को विश्व शान्ति दिवस बड़े धूम-धाम से मनाया गया। जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु एक सार्वजनिक समारोह का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य-मुख्य व्यक्तियों को निमन्त्रण दिया गया। पधारे हुए अतिथियों को बाबा के गुणों से परिचित कराया गया।

मेरठ-१८ जनवरी स्मृति सो समर्थी दिवस का सार्वजनिक कार्यक्रम अपने स्थानीय सेवा केन्द्र पर ही आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में भ्राता आर० पी० पाण्डेय (डी० एस० ओ०) मेरठ को आमन्त्रित किया गया। वे ईश्वरीय वि० वि० के कार्यक्रम को देखकर बड़ी प्रशंसा किए और बोले यह स्थान त्याग, योग, तप का है यहां पहुंच कर अलौकिक ज्ञान और परम आनन्द की प्राप्ति होती है।

अलीगढ़-उत्तरा खण्ड के सीमावर्ती जनपद उत्तर काशी (उ० प्र०) में जिला परिषद की ओर से आयोजित 'माघ मेले' के अवसर पर एक भव्य आध्यात्मिक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन पर्वतीय विकास एवं पर्यटन मंत्री भ्राता बलदेवसिंह आर्या ने किया। प्रदर्शनी से मेले में आये हजारों फुट ऊँचाई के बर्फीले क्षेत्र के ग्रामों के लोगों ने लाभ अिया।

इसके अलावा लखनऊ पेपर मिल्स, बहादुरगढ़, पानीपत, सोपला, मनसा, दादरी, बस्ती, पातूर, शंकेश्वर, वेरावल, खंडवा, भरुच, बीदर, जगाधरी, अहमदाबाद मणिनगर, बारंगल, रीवां, शहडोल, सिकन्दरा बाद इत्यादि सेवा-केन्द्रों से उत्साहवर्धक समाचार प्राप्त हुआ है। □

भोजन की शुद्धता (पृष्ठ १२ का शेष)

"महाराज, अब आप थकावट तो महसूस नहीं कर रहे ? अब आप ठीक तो हैं न ? कोई सेवा हो तो बताइये।"

राजा ने कहा कि यहाँ जल पीने और फल खाने के बाद उसे अजीब-अजीब सी खुशी हो रही है और वह अभूतपूर्व शान्ति महसूस कर रहा है। राजा ने साधु को बताया कि किस प्रकार प्यास लगी होने के कारण उसने कमण्डल में से पानी पिया था और जो पानी राजा का नौकर ले आया था, वह उसने बाद में कमण्डल में भर दिया था। तुरन्त साधु बोला—"अच्छा, अब मैं समझा कि कारण क्या है और किस्सा क्या है ! महाराज पहले तो मैं सोच ही नहीं पा रहा था कि आज मुझे क्या हो रहा है। मैंने भी साधना से उठने के बाद कमण्डल में से पानी पिया था। मुझे यह तो मालूम ही नहीं था कि स्वयं आपने अपने हाथों पानी भरा है। उस पानी को पीने के बाद मुझमें तो आज राजसी विचार आ रहे थे। राजाओं की तरह सुख-सुविधा से रहने को मन चाह रहा था। अब मैं समझा कि मेरे मन में ऐसे विचार क्यों चल रहे थे। और आपके मन में सात्विक भावना क्यों जागृत हुई थी। महाराज, मैंने पानी और फल का भगवान को भोग लगाया था। उनमें मेरी शुभ भावना, शुभ कामना और सात्विक वृत्ति भरी हुई थी। उन्हीं के ध्यान में मैं बैठा था और उन्हीं के गुणगान मैं कर रहा था। उन्हों को भोग लगाया हुआ प्रसाद रूप पानी जब आपने पिया तो आपके मन में सात्विकता जागृत हुई। परन्तु आपने जो कमण्डल में पानी डाला, वह तो मेरे लिए ही डाला होगा कि इसे आधु पियेगा अथवा कोई भी अन्य पियेगा, उसमें भगवान की भावना तो थी नहीं। उसमें तो यह भावना भरी हुई थी कि यह वह पानी है जो हम लाये हैं। यह प्रभु का है और प्रभु-समर्पित है, ऐसा मनोभाव उसमें भरा ही नहीं था। अतः उस पानी में रजोगुण ही का समावेश था और उसका लेश मेरे मन में आया।

तो बच्चो, कहने का भाव तो यह है कि भक्ति मार्ग में भी ऐसी कहानियाँ प्रचलित हैं जो इस बात को सिद्ध करती हैं कि लोग पहले अन्न जल को अन्न जल के रूप में ही नहीं देखते थे परन्तु उसमें क्या वासना भरी हुई है वे इसका भी ध्यान रखते थे। भगवान को भोग लगाए बिना वे कुछ नहीं खाते थे। प्रभु को अर्पित करने वाली चीज़ को वे पवित्र मानते थे।

अब हमें तो परमपिता परमात्मा का यथार्थ परिचय भी मिला है, उनके साथ हमारा क्या आत्मिक सम्बन्ध है, इसका भी हमें बोध हुआ है। वह परमात्मा हमें कैसे प्यार करता है और अविनाशी खजाना देता है, इसका भी हमें ज्ञान हो गया है। अतः अब हमें सदा भोग लगाकर ही खाना और पीना चाहिए।

शिक्षा—नव विश्व संरचना के लिए
अथवा
नये विश्व के लिए शिक्षा

ब्र० कु० डा० हरीश शुक्ल

आज विश्व में नानाविध अनिष्टों के कुचक्रों में फँसी मानवता अन्तिम श्वाँस लेती नज़र आ रही है। पापाचार, अनीति, भ्रष्टाचार, नैतिक अधः पतन आदि का साम्राज्य विस्तार पा रहा है। सिद्धांत विहीन राजनीति, श्रमरहित सम्पत्ति, चरित्रविहीन शिक्षा, अनैतिक व्यापार, मानवता रहित विज्ञान, त्याग व प्रेम शून्य भक्ति-पूजा, निरंकुश आनंद आदि सप्त पाप ग्रहयुती के चक्कर में आज पूरी मानवता किंकर्तव्य विमूढ़ है, तब आज का शिक्षा जगत भी इन आंदोलित विकृत तरंगों से अपने को मुक्त कैसे रख सकता है ? लक्ष विहीनता, अज्ञानता एवं भौतिकता की अंधी दौड़ में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य छूटते जा रहे हैं। शिक्षा के संबंध में अमर साहित्यकार प्रेमचंद के शब्द हैं—"शिक्षा संर्वांणपूर्ण हो, जिसमें मन, बुद्धि, चरित्र और देह सभी के विकास का अवसर मिले। वह शिक्षा जो सिर्फ अकल तक ही रह जाए अधूरी है।" शिक्षा का उद्देश्य ही है—Education is the development of good moral character. क्या आज की शिक्षा ने अपना यह उद्देश्य पूर्ण करने की दिशा में कोई कदम उठाया है ? नहीं, तो शिक्षा का व्यवसाय नुक्सान में है और जो व्यवसाय लाभ के बदले नुकसान कर रहा हो, उसे चलाये रखने में कौन-सी बुद्धिमानी है ?

सन् १८८२ से आज तक जितने भी शिक्षा आयोग नियुक्त हुए, सभी ने इस तरफ इशारा किया है और शिक्षा को इस अवदशा से मुक्त करने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा का सुझाव भी दिया है। महात्मा गांधी ने भी व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता का विशेष आग्रह एवं समर्थन किया था। कवीन्द्र रवीन्द्र तथा डा० राधाकृष्णन् का भी यही मत था—"आध्यात्मिक पुनरूत्थान के बिना वैज्ञानिक उपलब्धियाँ विनाश का कारण बनेंगी।" आज इसकी प्रत्यक्षता और यथार्थता और गहरी होती जा रही है।

इस दिशा में "धर्म निरपेक्षता" का किया गया प्रयोग भी सर्वमान्य एवं सफल साबित नहीं हुआ। धर्म निरपेक्ष होने का अर्थ, प्रेम से निरपेक्ष, सत्य से निरपेक्ष तथा जीवन में जो भी महत्व पूर्ण है, श्रेष्ठ है, उससे निरपेक्ष होना—इसी यथार्थता का प्रतिफलन आज सर्वत्र दिखाई पड़ रहा है।

आज प्रश्न है, धर्म एवं आध्यात्मिक शिक्षा को व्यावहारिक रूप कैसे दिया जाए ? वस्तुतः साम्प्रदायिक चितता धर्म नहीं है। धार्मिक शिक्षा के लिए पहली शर्त धर्म की सम्प्रदाओं से मुक्ति आवश्यक है। चेतना के दर्पण को धर्म के नाम पर परम्पराओं, संस्कारों-रूढ़ियों-मान्यताओं से ढांकना नहीं वरन् उनसे मुक्त करना है। धर्म घृणा नहीं लाता, प्रेम लाता है। जो धर्म मानव को मानव से तोड़ दें, वह परमात्मा से कैसे जोड़ सकते हैं ? धर्म धारणा में है, जीवन रूपांतरण में है। शिक्षा का केन्द्र यह हो और बच्चों को सिखाया जाए कि तुम आदमी हो, एक चेतन आत्मा हो, हिन्दू-मुसलमान नहीं, तो एक नया देश, नया विश्व पैदा होगा। धार्मिक व्यक्ति स्वस्थ व्यक्ति है जो न हिन्दू है, न मुसलमान, न जैन, न सिक्ख वह मात्र धार्मिक है, प्रशांत है, एक परमात्मा की अमर संतान है तथा विश्व मानव के साथ आपस में भ्रातृत्व की प्रेम भावना से जुड़ा है।

हमारी शिक्षा परीक्षा लक्षी है। असल में परीक्षायें समाप्त होती हैं, वहीं असली शिक्षा प्रारम्भ होती है। अन्तिम परीक्षा प्रेम की परीक्षा है। जीवन

की श्रेष्ठतर ऊँचाइयाँ प्रेम की ऊँचाइयाँ हैं। प्रेम पूर्ण छोटे से कृत्य में भी आत्मा की परिपूर्णता है। विवेकानंद अमरीका जा रहे हैं। मां शारदा से छुट्टी लेने जाते हैं। माँ शारदा पूछती हैं—"किसलिए जाते हो? विवेकानंद ने उत्तर दिया—"प्रेम का सन्देश देने जा रहा हूँ।"

अच्छा, उधर छुरी पड़ी है, उठाकर दे दो विवेकानंद छुरी का फलक शारदा जी की ओर बढ़ा देते हैं। जिस आदमी के मन में प्रेम है, वह छुरी का फलक स्वयं पकड़ेगा, ताकि दूसरे को चोट न लगे।

कहा यह जाता है कि आज विद्यार्थियों में प्रेम नहीं, विवेक नहीं, अनुशासन नहीं। आज विवेक के अभाव की पूर्ति अनुशासन से करने का प्रयत्न किया जा रहा है। विवेक हो तो एक स्वतः-स्फूर्त अनुशासन फलित होता है। शिक्षा का उद्देश्य अनुशासन सिखाना नहीं, आत्म विवेक सिखाना है। बच्चों से प्रेम हो, उनके भविष्य के प्रति मंगल कामनाएँ हों, तो अनुशासन स्वयं पैदा होता है।

विवेक के साथ चाहिए साहस। साहस, अभय की चट्टान पर धर्म का भवन खड़ा होता है। अंधे और लंगड़े की कथा साहस और विवेक की ही कथा है। अज्ञान की अग्नि लगे जंगल से जीवन को—आत्मा को बचाना है तो साहस के कंधों पर विवेक को बैठाना पड़ेगा। इसके लिए स्वस्मृति से आत्मबोध की दिशा में बच्चों को शिक्षित करना पड़ेगा।

आज शिक्षा की दुनिया में जड़-मूल से क्रांति की आवश्यकता है। गलत परिणामों को देखते, लगता है शिक्षा का ढांचा ही गलत है, शिक्षा का केन्द्र ही गलत है। आज शिक्षा का एकमात्र केन्द्र सफलता है, तो झूठ बढ़ रहा है, बेईमानी बढ़ रही है। जो आदमी सफल हो गया, वह महान हो गया। कैसे हुआ? यह कोई नहीं देखता। सफलता केन्द्र नहीं सुफलता केन्द्र होना चाहिए ताकि प्रेम पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण हो। एक आदमी भले काम में भले असफल हो जाए। सम्मान काम का होना चाहिए। सफलता का नहीं।

शिक्षा को ज्ञान का प्रसार कहा जाता है। मन अनेक बन्धनों में बंधना है तो ज्ञान का प्रसार कहाँ? ज्ञान स्वयं ही मुक्ति है। "साविधाया विमुक्तये" वही विद्या जो विमुक्त करे। वह विद्या मुक्त नहीं कर सकती जो दूसरों की प्रतिस्पर्धा में खड़ा कर दे। आज शिक्षा भय सिखाती, प्रलोभन सिखाती, ईर्ष्या सिखाती प्रतिस्पर्धा सिखाती और सिखाती महत्वाकांक्षा। जो शिक्षा महत्वाकांक्षा का ज्वर चढ़ा दे, अहंकार सिखाये, ऐसी शिक्षा ज्ञान की प्रसारक नहीं—ऐसी शिक्षा मुक्ति नहीं दे सकती। मुक्ति के साथ शान्ति का सम्बन्ध है। स्वस्थता का सम्बन्ध है। शिक्षा का आधार आत्मा की पूर्णता, आत्मा की अनुभूति है, एक सम्पूर्ण धार्मिकता पैदा करना है—ऐसी धार्मिकता जो परंपरा मुक्त हो, प्रतियोगिता-प्रतिस्पर्धामुक्त हो, हिंसक न हो, इर्ष्यालू न हो—प्रेम पूर्ण हो।

शिक्षा वह जो अभय में प्रतिष्ठित कर दे, अलोभ सिखाये, साहस दे, जीवन मूल्यों के प्रति क्रांति की शक्ति दे। महत्वाकांक्षा नहीं वरन् सहज स्वस्फूर्त विकास। महत्वाकांक्षा प्रतिस्पर्धा है, प्रेम सदा पीछे रहना सिखाता है। प्रतिस्पर्धा— ईर्ष्या है, घृणा है, हिंसा है, आगे आने के अहंकार की पोषक है। हम जिसे प्रेम करते हैं, उसे आगे बढ़ाते हैं। क्राइस्ट ने भी कहा—"धन्य हैं वे लोग, जो अन्तिम खड़े होने में समर्थ हैं, क्योंकि प्रभु का राज्य उन्हीं का होगा।" प्रेम पूर्ण व्यक्ति पीछे खड़ा होकर आनंद अनुभव करेगा, औरों को आगे देखना चाहेगा। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के निमित्त संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा के ऐसे ही प्रेम पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण स्वयं प्रेम सागर परमपिता परमात्मा ने किया तथा शिक्षा के ऐसे नवीन प्रेमपूर्ण प्रयोगों द्वारा विश्व परिवर्तक अनेक महान आत्माओं को नया जन्म दिया। धर्म-आध्यात्मिक से परिपूर्ण, नये विश्व के लिए आधार बने ऐसी सर्वांगपूर्ण शिक्षा का एक शीतल-प्रेम पूर्ण उत्सव इस अरावली पर्वत मालाओं के बीच स्थित इस मुख्यालय से निकल आज पतित-पावनी जीवंत गंगा बनकर देश-विदेश—पूरी धरती को आवरित करता नई, स्वस्थ, पूर्ण मानवता को जन्म दे रहा है।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

ईश्वरीय अनुभूति

(पृष्ठ ६ का शेष)

लिया था कि उनके लिए उपलब्धि और अभाव दोनों स्थितियाँ समान थीं।

तो निष्कर्ष यह हुआ कि हम जहाँ भी हैं, जैसी भी सामाजिक या आर्थिक स्थिति में हैं, इस सत्य से अभिभूत रहें कि मैं क्या हूँ, मेरा यथार्थ स्वरूप क्या है, मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है। आखिर व्यक्ति ही तो सृष्टि का आधार है। यह अच्छी बात है कि युवा शक्ति में व्यवस्था, सड़ी-गली मान्यताओं और अस्पष्ट निर्णयों के प्रति आक्रोश है। यह उनके चैतन्य की निशानी है। जरूरत बस इस बात की है कि इस शक्ति को सही दिशा प्रदान की जावे। एक बार अगर उसे सही दिशा मिल गयी, दूसरे शब्दों में एक बार अगर उसे उसके आत्मिक स्वरूप का ज्ञान हो गया तो दरिया का बहाव अपने आप नियंत्रित हो जायेगा, उसकी दिशा अपने आप निर्माण की ओर बदल जायेगी, हिंसा और द्वेष का स्थान स्वत: ही भ्रातृत्व भावना और प्रेमभाव और मुस्कान ले लेंगे, और तब विश्व परिवर्तन की प्रक्रिया अपने आप ही बिना किसी प्रयत्न के प्रारम्भ हो जावेगी। शोषण, मिलावट, तोड़फोड़, हिंसा और धरने की बात आते ही तब यह ध्यान आयेगा कि ये सब क्यों? किसलिए? क्या यह करने योग्य है? वह एक सुखद शुरूआत होगी। परन्तु यह तभी संभव है जब हम अपनी युवा पीढ़ी को सही दिशा दें, उन साधनों को बंद करें जो उनके दैहिक विकारों को उभारते हैं। उनके स्थान पर उन्हें आत्मिक ज्ञान और इन्टरनल डिटैचमेंट या कमल समान जीवन की प्रेरणा दें। बस जानने भर की देर है। एक बार अगर जान लिया तो बस अविरल आनन्द ही आनन्द है फिर उसे उसके सच्चे रास्ते से कोई नहीं डिगा पायेगा। आइये चलें हम उन शालाओं की ओर जहाँ आत्मज्ञान और कमल समान जीवन का पाठ पढ़ाया जाता है। स्वयं परमसत्ता शिव बाबा की प्रेरणा से संचालित ईश्वरीय शिक्षा में रत ब्रह्माकुमारी सेवा-केन्द्र ही तो वे शालाऐं हैं जहाँ सुयोग्य प्रशिक्षकों द्वारा, सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम के माध्यम से आत्मा और परमात्मा का ज्ञान दिया जाता है। विविध अध्यायों में समायोजित है यह ज्ञान—यथा मैं कौन हूँ, आत्मा क्या है, उसका निवास कहाँ है, उसका स्वरूप क्या है, परमसत्ता के क्या लक्षण हैं, क्या स्वरूप है उसका, कहाँ रहता है। राजयोग का क्या आधार है। पुनर्जन्म और कर्मों की गुह्य गति क्या है। दिव्य गुणों को धारण कर कैसे इस संसार के दुखों को दूर किया जा सकता है, कैसे विश्व में परिवर्तन लाया जा सकता है। आदि-आदि युवा शक्ति को पुन: आह्वान है आओ, चलें हम इन शालाओं की ओर। □

युवा शक्ति और विश्व परिवर्तन

(पृष्ठ ८ का शेष)

जब हम उस शान्ति के सागर शिवबाबा की याद में एकाग्र होते हैं तो गहन शान्ति का अनुभव होने लगता है, मन शान्ति की गहराई में डूब जाता है। तब ऐसा लगता है—मानों हम शान्ति सागर की लहरों में समा गये और आभास होने लगता है कि उसी परम शान्ति की किरणें हमसे समस्त विश्व में प्रवाहित हो रही हैं और अनेक अशान्त आत्माओं को शान्ति प्राप्त हो रही है।

योग-युक्त स्थिति में उस प्यार के सागर से मन की बातें करते-करते हम उनके प्यार में खो जाते हैं। हमें देह की दुनिया पूर्णत: भूल जाती है। प्रभु-प्रेम में लीन हो जाने का ये अनुभव भी निराला ही है। केवल हम ही उनके प्यार में लीन नहीं हो जाते, बल्कि उनके परम प्रेम की अनुभूतियों से स्वयं को उनकी गोद में समाया हुआ महसूस करते हैं।

हम तो जीते जी ईश्वर के हो चुके हैं। हमारा ये जीवन ईश्वरीय अनुभूतियों से इतना ओतप्रोत हो चुका है कि हमें अन्य किसी बात का अनुभव ही नहीं है। जब से हम ईश्वर के बने हमारे परम-आनन्द के दिन प्रारम्भ हुए, हमारे दुख व विघ्नों की घड़ियाँ समाप्त हो गईं। अब तो उनके साथ रहना यही हमारा जीवन है। □

जगदीश चन्द हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी 9/19 कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा संजीव प्रिंटर्स गांधीनगर दिल्ली-31 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70